Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम चरित्र कुमारनो रास.

श्रीजिनहर्ष सूरिकृत

वस्त्रदान फल महात्म्य रूप.

आ

महाप्रतापि पुरुषनो चरित्र

सज्जनोने

अवश्य वांचवा योग्य जाणीने

श्रावक जीमसिंह माणकें

श्रीमुंबा नगरी मध्ये

निर्णय सागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो

संवत १९४२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ वस्त्रदानोपरि श्री उत्तमचरित्र कुमाररासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरम जिणेसर चित्त धरुं, करूं सदा गुणग्राम ॥ नावठ नाजे जवतणी, लीजंते जस नाम ॥ १ ॥ मन वच काया शुद्ध करी, जो कीजें जिन जाप ॥ उज्ज्वल थाये आतमा, जाये दुःख संताप ॥ २ ॥ जेहने नामें संपजे, वंछित सुख सुविशाल ॥ कष्ट निवारे करि कृपा, सेवक जन प्रतिपाल ॥ ३ ॥ समरुं सरस्वती सामिनी, सुमती तणी दातार ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, कवियण जण आधार ॥ ४ ॥ हंसासण हंसागमणी, त्रिभुवन रूप अनूप ॥ मोह्या इंद नरिंद सहु, न लहे कोइ सरूप ॥ ५ ॥ जो माता सुप्रसन्न हुवे, आपे अनुपम ज्ञान ॥ ज्ञानथकी दर्शन हुवे, दर्शनमोक्ष विमान ॥ ६ ॥ जिन मुख पंकज वासिनी, समरी शारद माय ॥ कहुं कथा उत्तम चरित्र, सांजलजो चित्त लाय ॥ ७ ॥ नृपसुतें दीधुं नाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थुं, वस्त्रदान मुनिराय ॥ सुख पाम्या दाम्या अरि, दान तणे सुपसाय ॥ ८ ॥ सरस कथा संबंध छे, सुणजो सहु नर नार ॥ आलस उंघ प्रमाद तजी, धरजो चित्त मकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीप मकार, दक्षिण नरतक्षेत्र सुविचार ॥ नयरी अनुपम वाणारसी, त्रिनुवनमां नही अलका इसी ॥१॥ विशमो गढने विशमी पोल, कलके रविकोशीसा उल ॥ उंचा घर मंदिर कैलास, सप्तनूमिया जिहां आवास ॥२॥ जिन मंदिर शिव मंदिर जिहां, साधु साधवी विचरे तिहां ॥ वारु चारे वर्ण त्यां वसे, धर्मकरण सहु को उल्लसे ॥३॥ लोक सुखी तिहां धनद समान, घर घर दीजें वंछित दान ॥ दीन दुःखीनी करे संनाल, जीव सहुना जे प्रतिपाल ॥ ४ ॥ न करे कोइ केहनी कांई तांत, जेहथी थाये कलि उत्पात ॥ न करे परनिंदा परद्रोह, एहवा लोक वसे कृत सोह ॥ ५ ॥ तिण नगरी मकरध्वज नृप, अनिनव मकरध्वज अनुरूप ॥ न्यायवंत गुणवंत कृपाल, अरियणने लागे जेम काल ॥ ६ ॥ पंचमो लोकपाल नूपाल, देखी हरखे बालगोपाल ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हय गय रथ पायक भंमार, विजव तणो लाने नही पार ॥ ७ ॥ राणी जेहने लक्ष्मीवती, बुद्धिमंत जाणे सरस्वती ॥ रूपें जीती जेणें अपछरा, नमणी खमणी जाणे धरा ॥ ८ ॥ चउसठ नारी कलानिधि जाण, हंस हराव्यो गति पिक वाण ॥ जेहनुं वपु देखी उल्लस्या, उत्तम गुण आवीमनें वस्या ॥ ९ ॥ जोगवतां सुख लीलविलास, शुन मुहूरत सुत आयो तास ॥ उत्तम गुण देखी अनिराम, उत्तमचरित्र दियुं तस नाम ॥ १० ॥ बीज चंदनी परें कुमार, दिन दिन वाधे कलाविस्तार ॥ दीगो सहुनें आवे दाय, पूरव पुण्य तणे सुपसाय ॥ ११ ॥ बालपणे पण दया विशाल, न करे केहने हरउर मार ॥ सत्यवादी मुख अमृतवाण, न्यायवंत बहु गुणनो खाण ॥ १२ ॥ शस्त्र शास्त्रनो शीखी कला, धर्मशास्त्र शीख्यां निर्मला ॥ न लीये जेह अदत्तादान, परस्त्री जाणे बेहेन समान ॥ १३ ॥ नगति करे जिनवरनी घणी, गुरुनी नगति करे सुख नणी ॥ एहवो कुमर गुणें सुकमाल, कहे जिनहर्ष प्रथम थइ ढाल ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कला बहोंतेर जे ·ण्या, पंमितनाम धराय ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मकला आवी नहिं, तो मूरखना राय ॥ १ ॥ अव
र सर्व विकला कला, धर्मकला शिरदार ॥ धर्मकला
विण मानवी, पशुतणे अवतार ॥ २ ॥ रात दिवस
धर्मे रमे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ सुखदायी सहु लो
कमें, यश विस्तखो अपार ॥ ३ ॥ एक दिन मनमां
चिंतवे,हुं हवे थयो जुवान ॥ बाप तणुं धन नोगवुं,
एम तो न लहुं मान ॥ ४ ॥ बापतणुं धन बालप
ण, खातां खोट न कांइ ॥ तरुणपणें जो नोगवे, तो
पुरुषातन जाय ॥ ५ ॥ सोल वरस वोल्यां पछे, न
करे जो अभ्यास ॥ बाप तणी आशा करे,धिक जनमा
रो तास ॥ ६ ॥ सिंह सिंचाणो शा पुरुष, न करे प
रनी आश ॥ निज नुज खाटयुं खाइयें,तो लहियें जश
वास ॥ ७ ॥ जण न कहायो जगतमां, बालपणें य
शवास ॥ पशु हूआ ते बापडा, पडिया खावे घास
॥ ८ ॥ करुं परीक्षा कर्मनी, जोउं देश विदेश ॥ ख
डु लेइ निशि चालियो, धरतो हरख विशेष ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥ मारुं मन मोह्युं
रे वप्रानंदशुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म परिक्षा रे करण कुमर चल्यो रे, धरतो म
नमां उत्साह ॥ साथें लीधो रे नाग्यसखायीयो रे,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धीरजवंत गजगाह ॥ १ ॥ क० ॥ रणवनवासी गा
म नगर फरे रे, जोतो ख्याल अपार ॥ नमतो न
मतो चित्रकूट आवियो रे, एकलडो शिरदार ॥ २ ॥
क० ॥ महिसेन राजारे तेणे पुर राजियो रे, देश जे
हनो मेदपाट ॥ जेहने पोतरें बाणुं लख मालवो रे,
मरु मंमल करणाट ॥३॥क०॥ देशधणाना रे नरपति
उलंगे रे, पुहवी प्रबल प्रताप ॥ निशदिन लीणोरे र
हे जिन धर्मशुं रे, जाणे राज्य संताप ॥४॥क०॥ पु
त्र नहीं रे राजधुरा धरें रे, केहने आपुं राज ॥ योग्य
नही रे कोइ राज्य पालवा रे, छोडंतां पण लाज
॥ ५ ॥ क० ॥ उत्तम कोइ रे जो पुण्यवंत मिले रे,
तो तेहने देउं नार ॥ नियत करुं रे आतम साधना
रे, लेउं लेउं संजम नार ॥ ६ ॥ क० ॥ एक दिन रा
जारे रमवा निसखो रे, साथें बहु परिवार ॥ नव व
य वारु रे लक्षण सुंदरू रे, थइ घोडे असवार ॥७॥
क० ॥ नवल वछेरो रे चंचल गति नहीं रे, पूछे मं
त्रीने नूप ॥ कहो केम मंदगति ए अश्वनी रे, कोइ
न जाणे स्वरूप ॥ ८ ॥ क० ॥ वली वली पूछे रे
कोइ बोले नही रे, कोइ न नाखे विचार ॥ राय स
मीपें रे अश्व निहालीने रे, आव्यो उत्तम कुमार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ए ॥ क० ॥ कुमर पयंपे रे सुणो माहारायजी रे, एणे पियुं महिषीनुं दूध ॥ मंदगति थइ रे तेणे ए किशोरनी रे, नहीं गति चंचल शुद्ध ॥ १०॥ क० ॥ पय महिषीनुं रे थाये वायडुं रे, वायें गति जारे होय ॥ तुं केम जाणे रे वत्स राजा कहे रे, ज्ञानी चतुर ले कोय ॥ ११ ॥ क० ॥ अश्वपरीक्षा रे जाणुं राय जी रे, उत्तमचरित्र कहे ताम ॥ राय कहे रे साचुं तें कह्युं रे, लघुवय विद्याधाम ॥ १२ ॥ क० ॥ बाल पणाथी रे एहनी मा मुइ रे, बालक कांइ न खाय ॥ महिषी दूधें रे एह उछेरियो रे, तें जाण्युं ते न्याय ॥ १३ ॥क०॥ गुण देखीने रे उत्तमकुंमारना रे, हर्षित थयो रे नूपाल ॥ बीजी पूरी रे थइ ले एटले रे, कहे जिन हर्ष ए ढाल ॥१४॥क०॥ सर्वगाथा ॥४६॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरतणा गुण देखीने,रीझ्यो चित्त नरेश ॥ राजकुमर ले ए सही, निकलियो परदेश ॥ १ ॥ जोतां ए जुगतो मिल्यो,राजकाज समरद्ध ॥ एहने राज्य दे इ करी, साधुं हुं परमद्ध ॥ २ ॥ सांजल हो तुं शापुरुष, लइयें माहारुं राज ॥ हुं दीक्षा लेइश हवे, सारिश आतम काज ॥ ३ ॥ नाग्य संजोगें मुज नणी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुं मलियो गुणवंत ॥ ए लखियो छे ताहरे, वखतें राज्य महंत ॥४॥ जेहने जेहवुं जोग्यता, तेहने तेह वुं होय ॥ कानें कुंमल रयणमय,नयणें काजल जोय५

॥ ढाल त्रीजी ॥ नेम लालन मोरे
मन वस्यो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरकहे सुणतातजी, तुह्मे कह्युं ते प्रमाणो रे ॥ पण मुज आगल जायवुं, करवा काम कल्याणो रे ॥ १ ॥ कु० ॥ काम करीनें आवशुं, वलतुं कह्युं क रेशुं रे ॥ जे देश्यो सुप्रसन्न थइ, ते ततक्षण हुं लेश्युं रे ॥ २ ॥ कुं० ॥ एम कही राय चरण नमी, कीधुं कुमर प्रयाणो रे ॥ पुहवी अचरिज जोवतो, जोतो विविध विनाणो रे ॥ ३ ॥ कु०॥ नमतो नमतो अ नुक्रमें, नरुयक्ष नयरें आयो रे ॥ पुरनी शोना जोव तो, हैडे हर्षित थायो रे ॥ ४ ॥ कु० ॥ श्रीमुनिसुव्रत देहरे, जइ प्रणम्या जिनराजो रे ॥ नाव नक्ति स्तव ना करे,धन्य दिवस मुज आजो रे ॥५॥कु०॥ मूरति प्रनु मनमोहिनी, आर्त्ति जगत समावे रे ॥ जनमन आनंदकारिणी, दीग स्वामी सुहावे रे ॥ ६ ॥कु०॥ वंबित दान कलपलता,नवडुःख सायर नावो रे ॥ मू रति अमृतस्पंदिनी, जागे समकित नावो रे ॥ ७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ कु० ॥ तुं जगबंधव जगधणी, तुं जग दीन दया लो रे ॥ तुं जगतारक जगपति, करुणावंत कृपालो रे ॥ ८ ॥ कु० ॥ श्री जिनराज जुहारीने, आयो साय र तोरो रे ॥ एणे अवसर व्यवहारियो, कुबेरदत्त स धीरो रे ॥ ए ॥ कु० ॥ नूरि वाहण तेणें पूरियां, म गधद्वीप जणी आयो रे ॥ अष्टादश जोजन सयां,लें इ सुनट सखायो रे ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर जमरप ण कौतुकी, कुबेरदत्त संघातो रे ॥ वाहण बेठो जो यवा, वारिधि ख्यात विख्यातो रे ॥११॥कु०॥ वाह ण चाल्यां शुन दिनें, शकुन लेइ श्रीकारो रे ॥ केट लेक दिवसें गये, खूटयो वारि विचारो रे ॥ १२ ॥ ॥ कु० ॥ शून्यद्वीप जलकारणें, लोकें वाहण ढोयां रे ॥ सहु उतरिया जहाजथी,जलनां स्थानक जोयां रे ॥ १३ ॥ कु० ॥ लोक संग्रह जलनो करे, हवे ते णे द्वीप मजारो रे ॥ चमरकेतु राक्षस रहे, निर्दय क्रूर अपारो रे ॥ १४ ॥ कु० ॥ ब सहससेंती परिव रयो, आव्यो तिहां कृतांतो रे ॥ जाव्या लोक सहू तेणें, थया मनमां नयत्रांतो रे ॥ १५ ॥ कु० ॥ केइ नर जाल्या काखमां, केइ नर जाल्या हाथो रे ॥ केइ पगमांहे चांपी रह्यो, नाठा केइ अनाथो रे ॥ १६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ कु० ॥ केइ वाहण चडी चालिया, कुमर एकाकी वीरो रे ॥ सत्त्ववंत उपगारियो,सहु मूकाव्या सधीरो रे ॥ १७॥ कु०॥ राक्षसशुं युद्ध मांमियुं, उत्तम चरित्र कुमारें रे ॥ कहे जिनहर्ष कुमर जडयो, त्रीजी ढा ल मझारो रे ॥ १८ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ ६ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करतां जीत्यो कुमर,हाख्यो असुर पलाद ॥ सैन्य सहित नासी गयो, ऐ ऐ पुण्य प्रसाद ॥ १॥ कु मर सिंधुतट आवियो,खेडी गया जिहाज ॥ चतुर चि त्तमां चिंतवे, लोकमांहे नहीं लाज ॥ २ ॥ में ठोडा व्या सहु नणी,कीधो में उपकार ॥ सहुने राख्या जी वता, कृतघ्नी थया अपार ॥ ३ ॥ मुजने मूकीने ग या, नरदरिया मझार ॥ सहुको आपसवारथी,खोटो ए संसार ॥ ४॥ मुख मीठा जूठा हिये, रखे पतिजो कोय॥ जसु कीजें उपगारडो,सो फरी वैरी होय ॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥ अलबेलानी देशी॥

॥ कुमर विचारे चित्तमां रे लाल, लोक तणो श्यो दोष॥ उपगारीरे ॥ नय व्याकुल न खमी शक्या रे लाल, राक्षस केरो रोष॥ उपगारी रे ॥१॥कु०॥ ज न्मांतर कीधां होशे रे लाल, में केइ विरुआं पाप ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ उ० ॥ तेह कर्म आव्या उदे रे लाल, पाम्या एह संताप ॥ उ० ॥ २ ॥ कु० ॥ एहवुं चिंतवी चित्त मां रे लाल, ध्वज बांधी एक वृक्ष ॥ उ०॥ वन फल खातो तिहां रहे रे लाल, साहसवंत सुदक्ष ॥ उ०॥ ॥ ३ ॥ कु० ॥ द्वीप तणी अधिवासिनी रे लाल, देवीयें दीगे ताम ॥ उ० ॥ कुमर रूप रलियामणुं रे लाल, जाणे अनिनव काम ॥ उ० ॥ ४ ॥ कु० ॥ कामराग व्यापत थइ रे लाल, निपट कुमरनी पास ॥ उ० ॥ आवीने एणि परें कहे रे लाल, वारु वच न विलास ॥ उ० ॥ ५ ॥ कु० ॥ सांनल हो नर सा हसी रे लाल, हुं देवी एणे द्वीप ॥ उ० ॥ रूपें मो ही ताहरे रे लाल, आवी तुज समीप ॥ उ० ॥ ६॥ ॥ कु० ॥ ए तो पुण्यें पामियें रे लाल, सुरनारी संयो ग ॥ उ० ॥ तुं प्रीतम हुं पदमिणी रे लाल, मुजशुं नोगव नोग ॥ उ० ॥ ७ ॥ कु०॥ तुजने मलवा मा हरुं रे लाल, हियडुं धरे उल्लास ॥उ०॥ ए्यो लाहो जोबन तणो रे लाल, पूरो मुज मन आश ॥ उ० ॥ ॥ ८ ॥ कु० ॥ रूप निहाली ताहरुं रे लाल, गुण देखी सुविलास ॥ उ० ॥ मन चंचल तुज वांसे थयुं रे लाल, क्षण मेल्हे नहीं पास ॥ उ० ॥ ए ॥ कु०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मन थाये ते व्याकुलुं रे लाल, ढीज न खमणी जाय ॥ उ० ॥ काया मेलो दे हवे रे लाल, घणे कह्ये शुं थाय ॥ उ० ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर कहे देवी सुणो रे लाल, म कहीश एहवी वात ॥उ० ॥ किहां देवी किहां मानवी रे लाल, सरिखी न मले धात ॥उ०॥ ॥ ११ ॥ कु० ॥ परनारी मुज बहेनडी रे लाल, पर नारी मुज मात ॥उ०॥ हुं बंधव परनारीनो रे लाल, साची मानो वात ॥ उ० ॥ १२ ॥ कु० ॥ परनारी जे जोगवे रे लाल, नलो न नाखे कोय ॥ उ० ॥ एणे नव अपजश तेहनुं रे लाल, परनव दुर्गति होय ॥ उ० ॥ १३ ॥ कु० ॥ हुं बोरु हुं तहरो रे लाल, तुं ते माहारी माय ॥उ० ॥ शरणे आव्यो ताहरे रे लाल, कर रक्षा सुपसाय ॥ उ० ॥ १४ ॥ कु० ॥ रीशाणी देवी कहे रे लाल, कां रे मूढ गमार ॥उ०॥ माय बहेन मुजने कहे रे लाल,सगपण किशो विचार ॥ उ० ॥ १५ ॥ कु० ॥ कह्युं करीश नही माहरुं रे लाल,देइश तुजने दुःख ॥उ०॥ जो जाणे हुं जीवतो रे लाल, मुजश्युं नोगव सुख ॥ उ० ॥ १६ ॥ कु० ॥ हुं तूटी तुजने दिसुं रे लाल, अरथ गरथ नंमार ॥ ॥ उ०॥ रूठी तो हुं तुज तणी रे लाल, मारीश खड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग प्रहार ॥ ल० ॥ १७ ॥ कु०॥ कुमर नणी बीहीव राववा रें लाल, रूप कीधुं विकराल ॥ल०॥ कहे जिन हर्ष सुणो हवे रे लाल, ए चोथी थइ ढाल ॥ ल० ॥ ॥ कु० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काढी खड्ग कहे सुरी,कांरे मरे निटोल ॥ हितकारण तुजने कहुं, मान मान मुज बोल ॥ १ ॥ सुआ मां कांइ नथी, जीवंतां कल्याण ॥ शुं जाये ले ताहरुं, करेज खांचाताण ॥ २ ॥ कुमर कहे कर जोडिने,सांजल मोरी माय ॥ मुजथी एहवुं नवि होवे, क्यारें ए अन्याय ॥ ३ ॥ सुधापानथी जो मरें,चंइ पडे अंगार ॥ तो पण हुं परनारीने, न करुं अंगीकार ॥ ४ जो जाणे तो मार तुं, जो जाणे तो तार ॥ आगल पाछल सहु नणी, मरवुं ले एकवार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बहेनी रही न सकी तिसेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ साहस देखी तेहनुं जी, देखी शील उदार ॥ उत्तमगुण देखी करी जी, देवी कहे तेणि वार ॥ १ ॥ सलूणा ॥ धन धन तुज अवतार ॥ तुज सरीखो कोइ नहीं जी, जोतां एणे संसार ॥ स० ॥ ध० ॥ ए आं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणी ॥ तुज दरिसण देखीकरी जी, पवित्र थया मुज नेण ॥ श्रवण सफल थया माहरा जी, सांभली ताह रांवेण ॥ २ ॥स० ॥ प्राणथकी पण तुज जणी जी, वाल्हुं लाग्युं रे शील ॥ चित्त चूक्युं नहीं ताहरुं जी, शीलें पामीश लील ॥३॥ स० ॥ खुशी थइ देवी करे जी, स्तवना बे कर जोड ॥ आगलें मूकी कनकनी जी, रयणनी द्वादश कोड ॥ ४ ॥ स० ॥ पाय प्रण मी देवी गइ जी, समुद्दत्त तिहां शेठ ॥ शेठ कहे मु ज वाहणें जी, आवी बेसो निचिंत ॥ ५॥ स० ॥ ध न लेइ प्रवहण चढ्यो जी, चाल्या समुद्र मझार ॥ नरदरिया विचें चालतां जी, खूटयो वाहण वारि ॥ ॥ ६ ॥ स० ॥ निगरण सूकां लोकनां जी, जलविण सूकारे होठ ॥ आकुल व्याकुल सहु थयां जी, मर वानी थइ गोठ ॥ ७ ॥ स० ॥ हा हा धिक जलचरय की जी, अमें थया सत्त्व हीन ॥ जलचर जल पाखें मरेजी, अमें जलमांहे दीन ॥ ८ ॥ स० ॥ दीन व चन विलवे सहू जी, शुं थाशे जगदीश ॥ जल वि ण प्राण रहे नहीं जी, मरवुं विशवा वीश ॥ ए ॥ ॥ स० ॥ शास्त्र नीहालीने कहे जी, निर्यामक तेणि वार ॥ वेल उतरशे नीरनी जी,हमणा ए निरधार ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१० ॥ स० ॥ प्रगट होशे जलकांतमय जी, पर्वत जलअस्पृष्ट ॥ कूप छे तेनी उपरें जी, स्वादुवंत जल मिष्ट ॥ ११ ॥ स० ॥ परंपरायें सांभल्युं जी,वली छे शास्त्र मझार ॥ यानपात्र थापी करी जी, तिहां जइ लीजें वारि ॥ १२ ॥ स० ॥ निर्यामक वाणी सुणी जी, खुशी थया सहु लोक ॥ कहे जिन हरख कह्युं इश्युं जी, पांचमी ढाल विलोक ॥ १३ ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ १११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण एक महानय छे इहां, नमरकेतु इणें नाम ॥ राक्षस रहे छे द्वीपमां, तेहनुं छे ए गाम ॥ १ ॥ सहस छ सय कोणप रहे, रात दिवस ते पास ॥ मा हामांस नक्षण करे, क्रूर अधिक उल्लास ॥ २ ॥ स मुद्देवता तेहने,शपथ कराव्यो एह ॥ तेतो तीर्ण न क्षण करे,प्रवहण तजवा तेह ॥ ३ ॥ निज इछायें ते रहे, वचन सुण्यां श्रवणेह ॥ वात करंतां एटले, प र्वत प्रगट्यो तेह ॥ ४ ॥ लोकें कूप निहालियो, प ण राक्षसनी नीति ॥ तरष्या पण बेसी रह्या, वाह णमां चलचित्त ॥ ५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल छठी ॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे जल कां न ल्यो रे, बेसी रह्या त मे केम ॥ चालो थइ उतावला रे, जलविण तूटे प्रे म ॥ १ ॥ कुमरजी । जल केम आण्युं जाय, एतो रा क्षसनो नय थाय ॥ एतो वात विषम कहेवाय, ए तो फोगट मरण उपाय ॥ २ ॥ कु० ॥ करुणा आ णी लोकनी रे, उपगारी मतिमंत ॥ बाण अबाण लेइ करी रे, बोले एम बलवंत ॥ ३ ॥ कु० ॥ वाह णथी हवे ऊतरो रे, मत बीहो मन मांहि ॥ हुं र क्षक हुं तुम तणो रे, राखुं राक्षस साहि ॥ ४ ॥ ॥ कु० ॥ मुज आगल ए बापडो रे, एहनुं शुं छे जोर ॥ सुर सुरपति पण माहरी, रे चांपी न शके को र ॥ ५ ॥ कु० ॥ रात्रिचरनी नाणशुं रे, सुपनामां पण नीति ॥ यानपात्रथी उतर्यो रे, राजवियांनी रीति ॥ ६ ॥ कु० ॥ कुमर बाण खेंची करी रे, उजो कूवा तीर ॥ लोक नाजन लइ आवियां रे, नरवा नि र्मल नीर ॥ ७ ॥ कु० ॥ नाजन बांधी रांढवे रे, मू क्युं कूप मझार ॥ कूवाथी नवि निसरे रे, एक चलुं पण वारि ॥ ८ ॥ कु० ॥ जलनृतजल नवि नीसरे रे, इहां कारण छे कोय ॥ पण कोइ खबर करे नहीं रे, रा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसनो नय होय ॥ ए ॥ कु० ॥ एहवो कोइ बलवं
त छे रे, पेशी कूवामांहे ॥ नीर करे कोइ मोकलुं रे,
सहुने करे उत्साह ॥ १० ॥ कु० ॥ केणही वचन न
मानियुं रे,कुमर थयो हुशीयार ॥ वारे शेठ कुमारने रे,
ताहरो छे आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ कूवामां पेशी क
री रे, हुं करुं मुगतुं नीर ॥ लोकतृषाकुल सहु म
रे रे, तेणें मुज मन दिलगीर ॥ १२ ॥ कु० ॥ रज्जु
विलंबी उतर्यो रे, कूवामांहे कुमार ॥ सात्विक चक्र
वर्त्ति सारिखो रे, लोक तणो आधार ॥ १३ ॥ कु०॥
पण कंचननी जालिका रे, उपर छे अभिराम ॥जा०॥
छिद्रमांहेथी जल नथुं रे, दीतुं नयणें ताम ॥१४॥कु०
चतुर विचारे चित्तमां रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ कहे
जिनहर्ष थयुं इश्युं रे, छठी ढाल मझार ॥ १५ ॥
॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो अचरिज इश्युं, किणें निपायुं एह॥
कनक कंबानी जालिका, देखी उल्लसे देह ॥ १ ॥ उ
रि परि कीधी कुमर, जाली कंबा तेह ॥ जल भारग
कीधो प्रगट, लोकां तणी कहेह ॥ २ ॥ जल काढो
गाढा थइ, म करो हवे विलंब ॥ तृषामांहे अमृत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लह्यो, फल्यो अकालें अंब ॥ ३ ॥ जल काढी नाजन नयां, हवे कुमर तेणि वार ॥ कूपनींतमां बारणुं, म णि सोपानुं द्वार ॥ ४ ॥ देखी मनमां चिंतवे, नाग्य परीक्षा काज ॥ हुं परदेशें निसस्यो, गेडी घरनुं राज ॥५॥ चित्रकूट स्वामी तणुं, ते पण न लियुं राज ॥ मूकाव्या राक्षसथकी, लोकांतणा समाज ॥ ६ ॥ पा णी में कीधुं प्रगट,सांप्रत कूप मजार ॥ तृषा गमावी लोकनी, कीधो ए उपकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माहाविदेह क्षेत्र सो हामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुक जोवा कौतुकी, चाल्यो चतुर सुजाण लाल रे ॥ वाट बांधी रे वारु चोरसें, कीजें केहां व खाण लाल रे ॥ १ ॥ कौ० ॥ मणिसोपान सोहाम णां, कंचनमय प्रासाद लाल रे ॥ आगल कुमर नि हालियुं, देखी थयो आल्हाद लाल रे ॥ २ ॥कौ०॥ बेठी पहेली नूमिका, वृद्धा नारी एक लाल रे ॥ जइ ने तिहां ऊनो रह्यो, बोली आणी विवेक लाल रे ॥ ॥ ३ ॥ कौ० ॥ कां रे मूरख मानवी, हीणपुण्य बुद्धि हीण लाल रे ॥ नूलो आव्यो जमघरें, आऊखुं थयुं क्षीण लाल रे ॥ ४ ॥ कौ० ॥ कानेंही नवि सां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव्यो, भ्रमरकेतु किनास लाल रे ॥ कुमर कहे हुं उ
लखुं, में जीत्यो छे तास लाल रे ॥ ५ ॥ कौ० ॥
पूछुं तुजने मावडी, केहनो ए प्रासाद लाल रे
॥ तुं कोण केम बेठी इहां, कहे मूकी विखवा
द लाल रे ॥ ६ ॥ कौ० ॥ वचन सुणी बलवंतनां,
वृद्धा कहे सुण वीर लाल रे ॥ तुं सत्यवंत शिरोम
णि, दीसे गुणगंभीर लाल रे ॥ ७ ॥ कौ० ॥ राक्षस
द्वीप इहां ढूकडो, लंका नयरी ईस लाल रे ॥ भ्रमर
केतु राक्षस बली, राज्य करे अवनीश लाल रे ॥८॥
॥ कौ०॥ कन्या तास मदालसा, सयल कलानी जाण
लाल रे ॥ लक्षण अंगें शोभतां, रूपें रति पिकवाण
लाल रे ॥ ए ॥ कौ० ॥ देवकुमरीने सारिखी, एहवी
नहिं कोइ अन्य लाल रे ॥ राय भणी वाल्ही घणुं,
पोतें पुण्य अगण्य लाल रे ॥ १० ॥ कौ० ॥ भ्रमरके
तु नृप एकदा, नैमित्तिक पूछेह लाल रे ॥ मुज कन्या
वर कोण होशे, कहे विचारी तेह लाल रे ॥ ११ ॥
॥ कौ० ॥ एहने वर भूचर होशे, क्षत्रिय राजकुमा
र लाल रे ॥ हिमवंत सीमा राज्यनी, दक्षिणलंका
धार लाल रे लाल रे ॥ १२ ॥ कौ० ॥ महाराजाधि
राजा होशे, दल बल जास अपार लाल रे ॥ विद्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर नर राजवी, सेवा करशे तास लाल रे ॥ १३ ॥ ॥ कौ० ॥ वयण सुणीने तेहनां, खेद लह्यो भूपाल लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष किश्युं हुश्ये, ढाढा सात मी ढाल लाल रे ॥ १४ ॥ कौ० ॥ सर्वगाथा ॥१५३॥

॥ दोहा ॥

॥ भूचरपुत्री परणशे, कन्या देवकुमार ॥ खेचर इयुं खूटी गया, एहवो करी विचार ॥ १ ॥ समुद्रमां हे पर्वत शिखर, कूपमांहे करी द्वार ॥ मोहोटो महेल रच्यो इहां, कोइ न जाणे सार ॥ २ ॥ कन्याने राखो इहां, राखी मुज रखवाल॥ पंचरतन कुमरी भणी, दीधां बे भूपाल ॥ ३ ॥ हुं दासी बुं तेहनी, भ्रमरके तु लंकेश ॥ धनधान्यादिक मोकले, कूपवाट सुविशेष ॥ ४ ॥ कूआमांहे पडण भय, जाली कनक बणाय ॥ जतन करी राखी इहां, भूचर केम परणाय॥५॥ ॥ ढाल आठमी ॥ जीहो मिथिला नगरीनो राजियो ॥

॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एकदिन अपर निमित्तीयो, जीहो पूछे रा क्षस तास ॥ जीहो कहेने मुज कन्या तणो, जीहो कोण वर थाशे भास ॥ १ ॥ लंकापति पूछे तास विचार ॥ ए आंकणी ॥ जीहो पूरवली परें तेणें कह्युं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीहो चढियो क्रोध अपार ॥ २ ॥ लं० ॥ जीहो च्र मरकेतु नाखे वली,जीहो केम जाणीजें तेह ॥ जीहो नाखे ताम निमित्तियो, जीहो सांभल नृप सुसनेह ॥ ३ ॥ लं० ॥ जीहो जांत्रिक जन नखवा नणी, जी हो तुं गयो द्वीपमझार ॥ जीहो तुजने जीत्यो एकले, जीहो ते नर तुं अवधार ॥४॥लं०॥ जीहो मास एक थयो तेहने, जीहो सांभली चढियो क्रोध ॥ जीहो रा क्षसदल मेली करी, जीहो हणवा गयो ते जोध ॥५ ॥ लं० ॥ जीहो आगल शुं थाशे हवे, जीहो ते जा णे जगदीश ॥ जीहो कुमर विचारे ते सही,जीहो रा क्षस तणो अधीश ॥ ६ ॥ लं० ॥ जीहो एतो में जा एयो हवे, जीहो मुज वैरीनुं गाम ॥ जीहो घाट वाट रोकी रह्यो,जीहो मुज मारेवा काम ॥७॥लं०॥ जीहो कूड कपट मायावीनी,जीहो ए राक्षसनी जात ॥ जी हो जतन करी रहेवुं इहां, जीहो प्रगट न करवी वा त ॥८॥ लं० ॥ जीहो कुमरी ताम मदालसा, जीहो रूप कला नंभार ॥ जीहो देवजुवनथी उतरी, जीहो जाणे देवकुमारि ॥९॥लं०॥ जीहो कुमररूप देखी क री,जीहो मोही कुमरी ताम॥ जीहो वदन कमल जोइ रही, जीहो जेम दालिडी दाम ॥ १० ॥ लं० ॥ जी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो रायकुमर पण तेहनुं,जीहो मोह्यो देखी रूप ॥ जी हो चपल नयण चोटी गयो, जीहो जाग्यो प्रेम अनूप ॥ ११ ॥लं० ॥ जीहो बेहुनो राग जोइ करी, जीहो वृद्धा नारी ताम ॥ जीहो गंधर्व विवाह करी तिहां, जीहो परणाव्यां तेणे ठाम ॥ १२ ॥ लं० ॥ जीहो पृथिव्यादिक चारे जलां, जीहो पांचमुं रतन आकाश ॥ जीहो प्राजाविक पांचे जलां, जीहो देवाधिष्ठित खास ॥ १३ ॥ लं० ॥ जीहो पांच रतन मदालसा,जीहो लेइ वृद्धा रे नारि ॥ जीहो आव्यो कुमर उतावलो, जीहो तेणिहिज कूप मझार ॥ १४ ॥लं० जीहो समुद्रदत्तना आदमी,जीहो जल काढे तिणी वार ॥ जीहो कहे जिन हर्षं शुं हवे, जीहो उत्तम चरित्रकुमार ॥ १५ ॥ लं० ॥ सर्वगाथा ॥१७२॥

॥ दोहा ॥

॥ बाहिर काढो मुज जणी, नाखे एम कुमार ॥ रज्जु प्रयोगें निसर्यां, त्रणे जण तेणि वार ॥ १ ॥ सघले विस्मय पामियो,अचरिज थयुं अपार ॥ जलदेवी के किन्नरी,के अपछर अवतार ॥ २ ॥ कुमरजणी पूछे सहू,सुर कन्या कोण एह ॥ सहु वृत्तांत सुणी इश्युं, हरख्या सहु नर तेह ॥ ३ ॥ प्रवहण चढीने चालि

या, धरता मन आणंद ॥ वलि दिवस केटले गए, जल खूटयुं नही बुंद ॥४॥ लोक सहु आकुल थया, तूट ण लाग्यां प्राण ॥ मरण मान सहुको थया, सहुनी थाशे हाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ पारधीयानी देशी ॥

॥ नांखे एम मदालसा रे, विनय करीने नेह रे ॥प्रीतमजी॥ मरशे सहु ए मानवी रे, पाणी पाखें एह रे ॥१॥ प्रीतमजी ॥ तुमें मारा आतमजी, तमने कहुं जेम तेमजी ॥ जल मलशे कहो केमजी के ॥ करवो करवो रे उपाय कोइ तेह रे ॥ २ ॥ प्रीत० ॥ ए आं कणी ॥ कुमर कहे जल केम मले रे, खारा समुद्रमझा र रे ॥ प्री० ॥ द्वीपकूप कोइ नहीं रे, सुणी सुकुलि णी नार रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ मुज आन्नरण करंमियो रे, स्वामी उघाडो एह रे ॥ प्री० ॥ पांच रतन एमां हे ठे रे, गुण सांनल तुं तेह रे ॥ ४ ॥ प्री०॥ नूदेवा धिष्ठित ठे रे, पूजी मागे पास रे ॥ प्री० ॥ थाल क चोलां कनकनां रे, विविध नाजन दे खास रे ॥ ५ ॥ ॥ प्रीत० ॥ शयनासन आदिक नलां रे, मग गोधूम सुशालि रे ॥ प्री० ॥ नूषण मणिकंचन तणां रे, प्रग ट हुवे ततकाल रे ॥६॥प्री०॥ नीररतन नज मूकीयें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रे, वंछित जलनी वृष्टि रे ॥प्री०॥ शालि दाल सहु सु खडी रे, तेज रतनें सुवृष्टि रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ वायुर तन गगने धर्युं रे, मृदुअनुकूल समीर रे ॥ प्री० ॥ गगन रतन पटकुल दे रे, देव दुष्यादिक चीर रे ॥८॥ ॥ प्रीत० ॥ करुणा करी प्रीतम तुमें रे, दुःखिया लोक निहाल रे॥प्री०॥ पांच रतन लेइ करी रे,नीर तृषा तुं टाल रे॥९॥प्री०॥ नदी न निज पाणी पीये रे,निजफल वृक्ष न खाय रे ॥प्री०॥ मेह न मागे सर नरे रे,परउ पगारें थाय रे ॥१०॥प्री०॥ जे अविलंबें वेलीयां रे, आपद दे आधार रे ॥ प्री० ॥ शरणें राखे मारतां रे, ते मोहोटा संसार रे ॥ ११ ॥ प्रीत० ॥ उपगारी तम सारिखा रे, जग सरज्या किरतार रे ॥ प्रीत० ॥ पर नां दुःख नाजन जणी रे, वली करवा उपगार रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रीत० ॥ नारी वचन एहवां सुणी रे, हर्षित थयो कुमार रे ॥ प्रीत० ॥ धन्य ए नारी सुलक्षणी रे, धन्य एहनो अवतार रे ॥ १३ ॥ प्रीत० ॥ रा क्षस कुलें ए उपनी रे, एहवी दीनदयाल रे ॥प्रीत०॥ कहे जिनहर्ष सोहामणी रे, ए थइ नवमी ढाल रे ॥ १४ ॥ प्रीत० ॥ सर्व गाथा ॥ १९० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ नारी वयण सुणी करी, प्रमुदित थइ कुमार ॥ कूआथंनें बांधियुं, नीरतन तेणि वार ॥ १ ॥ मेघवृ ष्टि हुइ तुरत, सहू नखां जलपात्र ॥ लोक खुशी सहु को थयां, शीतल कीधां गात्र ॥ २ ॥ पांचे रतन प्र नावथी, विविध किया उपगार ॥ लोक सहु सेवा क रे, गुण मोहोटो संसार ॥ ३ ॥ गुण पूजाए लोक मां, गुणने आदर थाय ॥ राजा परजा गुणथकी, स हुको लागे पाय ॥ ४ ॥ समुद्दत्त दीठी नयण, नारी रतन एक दीस ॥ कामें व्यामोहित थयो, ऐऐ रू प जगदीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ करम परीक्षा करण

कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनमांहे पापी रे शेठ एम चिंतवे रे, एहनी ना री रे होय ॥ तो हुं जाणुं रे जव सफलो थयो रे,मु ज सरिखो नहीं कोय ॥ १ ॥ मनमां० ॥ एहवी ना री रे पुण्यें पामियें रे, के तूटे जगदीश ॥ पुण्यविण न मिले रे एहवी गोरडी रे, जाणुं विशवावीश ॥ ॥ २॥ म० ॥ दाय उपायें रे ए लेवी सही रे, ए वि ण रह्युं न जाय ॥ एहवी नारी रे जो हुं नोगवुं रे,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो वंछित सुख थाय ॥ ३ ॥ म० ॥ आवो आवो नाइ रे नेला बेसीयें रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ पा णीवल मनें रे तुज विण नवि गमे रे, जीवन प्राण आधार ॥ ४ ॥ म० ॥ मननी वातो रे बेसी कीजि यें रे, सुख दुःखनी एकांत ॥ गुणवंत पाखें रे केही गोठडी रे, गुणवंत शुं नीरांत ॥ ५ ॥ म० ॥ तुं उ पगारी रे नांजे पर दुःखडां रे, तुज समो नर नहीं कोय ॥ तुज मुख दीतां रे तन मन उल्लसे रे, हीयडुं हर्षित होय ॥ ६ ॥ म० ॥ मोहनगारा रे तें मुज म न हस्युं रे, तुज विण रह्युं रे न जाय ॥ मोहनी लगाइ रे तें कांइ प्रेमनी रे, तुज पांखे न सुहाय ॥ ७ ॥ ॥ म० ॥ दिन तो कीजें रे तुज मन गोठडी रे, दिव स संहेलो रे जाय ॥ रात्रें जाजे रे ताहरे स्थानकें रे, शेठ कहे चित्त लाय ॥ ८ ॥ म० ॥ अरज करुं हुं रे तुजने एटली रे, अरज सफल कर मित्त ॥ पर उप गारी रे कर उपगारडो रे, चतुर खुशी कर चित्त ॥ ॥ ए ॥ म० ॥ जे आपणनें रे वांछे वालहा रे, तेहने न दीजें पूंठ ॥ तन मन दीजें रे तेहने आप णुं रे, आदर दीजें अधिक ॥ १० ॥ म० ॥ वचन न लोपे रे उत्तम कुल तणो रे, नेह दीये केम तेह ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेम तेम जोडे रे प्रात सोहामणी रे,निगुण न पाले तेह ॥ ११ ॥ म० ॥ घणुं घणुं तुजनेरे कहीयें किश्युं रे, तुं छे दीनदयाल ॥ कहे जिन हर्ष विचारो वालहा रे, ए थइ दशमी ढाल ॥१२॥म०॥ सर्वगाथा ॥२०७

॥ दोहा ॥

॥कुमरी कहे मदालसा,सांभल कंत सुजाण ॥ शेठ तणी ए प्रीतडी, हानि जाण निज प्राण ॥ १ ॥ कंत म रा चे एहशुं, ए में कपटी दीठ ॥ कालाशिरनो आदमी, होये दुष्ट मुहमिठ ॥ २ ॥ अति विश्वास न कीजियें, कंत कहूं कर जोडि ॥ एक कनक अरु कामिनी,एहथी अनरथ कोडि ॥ ३ ॥ यतः॥ पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा, च नव यौवनं ॥ द्रविणं पतितं दृष्ट्वा, कस्य नो चलते मनः ॥१॥ कुमर कहे सांभल प्रिये,ए उपगारी शेठ ॥ आपण ऊपर एहनी, सुनजर शीतल दृष्ट ॥ ४ ॥ मुह मीठा जूठा हियें, हुं न पतीजुं ताय ॥ मीठा बोलो मोरियो, साप सपूत्रो खाय ॥ ५ ॥ धूता होय सलक्ष णा, कुसती होय सलज्ज ॥ खारा पाणी सीयलां,ब हुफल होय अखज्ज ॥ ६ ॥ वयण नारीनां अवगणी, निशिवासर रहे पास ॥ अवसर देखी नाखियो, सा यरमांहे तास ॥ ७ ॥ कोलाहल करी उठियो, प

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डियो समुद्रमझार ॥ मित्र सनेही माहरो, उत्तमच रित्र कुमार ॥७॥ जाण्युं तुरत मदालसा, ए पापीनां काम ॥ नाख्यो जलमां मुज पति,रोवण लागी ताम॥ए

॥ ढाल अग्यारमी ॥ नावननी देशी ॥

॥ परम सनेही वालम माहरो रे, आतमनो आधार ॥ मुज अबलाने मूकी एकली रे, सायरमां निरधार ॥ १ ॥ प० ॥ हुं कंता कहेती ए नीचनो रे, म करीश तुं विश्वास ॥ माहरुं कह्युं न मान्युं नाहलो रे, तो फल पाम्यां तास ॥ २ ॥ प० ॥ तें जइ क जोले जाण्युं सहु रे, धवलुं तेटलुं दूध ॥ पण कपटीनुं कपट उलख्युं नहीं रे, हियडुं जास अशुद्ध ॥ ३ ॥ प० ॥ धूतारा तो मुह मीठा होये रे, पण हियडामां पाप ॥ नुंहूं करतां ते बीहे नहीं रे, उप जावे संताप ॥ ४ ॥ प० ॥ मुख दीवाली होली हियडले रे, एहवा दुर्जन होय ॥ पग पग नाखे पापी पासला रे, रखे पतीजो कोय ॥ ५ ॥ प० ॥ आशा वेदी माहरी पापीयें रें, कीधी निपट निराश ॥ जीवन विण हुं जीवुं केहि परें रे,नाखे प्रबल निःश्वास ॥६॥ ॥ प० ॥ जाणे पावसजलधर उल्लस्यो रे, नयणन खंभे धार ॥ पियु पियु चातक ज्युं प्रमदा करे रे, जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्यो विरह अपार ॥ ७ ॥ प० ॥ क्षण रोवे क्षण जो
वे दश दिशें रे, क्षण क्षण थाये चेत ॥ छूटे यूथ ट
ली मृगली परें रे, पियु तोडयुं कांइ हेत ॥ ८ ॥
प० ॥ प्राण होशे माहरां हवे प्राहुणां रे, तुज विण
सुगुणा नाह ॥ ए दुःख में खमणुं जाये नहीं रे,
विरह लगायो दाह ॥ ए ॥ प० ॥ में चिंतामणि रत्न
न लह्युं हतुं रे, राख्युं करी जतन ॥ पण छाजे नहीं
पुण्य विहूणडा रे, रांकां घरे रतन ॥ १० ॥ प० ॥
किश्युं करुं सांभल साहेलडी रे, हियडे दुःख न समा
य ॥ हीयडुं फाटे रत्नतलावड्युं रे, केम जीवुं मोरी मा
य ॥ ११ ॥ प० ॥ प्राणसनेही जलनिधिमां पड्यो
रे, मने मलवानी आश ॥ झंपापात करुं जो नीरमां रे,
तो पोहोचुं पियु पास ॥ १२ ॥ प० ॥ हवे जीव्यानो
स्वाद नहीं किश्यो रे, वर छोडीजें जी प्राण ॥ ढाल थ
इ पूरी अग्यारमी रे, कहे जिनहर्ष सुजाण ॥ १३ ॥
॥ प० ॥ सर्वगाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रीतमविण जीवुं नही, वंछिश पापी प्राण ॥
निशदिन वींधे मुज भणी, पंचबाण सपराण ॥ १ ॥
काया पावक संग्रहो, जीव ग्रहो जमराण ॥ रूप रसा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तल संग्रहो, गुण थाउं पाषाण ॥ २ ॥ मरवाने उ
द्यत थई, वृद्धा कहे तेणि वार ॥ म मर म मर
मूरख म मर, सांनल कहुं विचार ॥ ३ ॥ फांसी विष
जक्षण करे, पाणी अग्निप्रवेश ॥ गिरितरुवरथी प
डी मरे, कुमरण कहियें एस ॥ ४ ॥ एह मरणथी
नवो नवें, लहियें मरण अछेह ॥ पुण्यें मलशो जी
वतो, तुज प्रीतम सुसनेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ नणदल हे मोहन मुदरी ले ग
यो ॥ ए देशी ॥

॥ शेठ कहे आवी करी, रूडां वयण रसाल ॥ हे व
निता सुण वातडी, तुं म पड म पड दुःखजाल ॥१॥ रम
णी हे मान वयण तुं माहरुं, मांहरुं वयण तुं पाल ॥र०
॥ एआंकणी॥ मित्र अमूलक माहरो, उत्तमचरित्र कु
मार ॥ ते मुजने नवि वीसरे हो, साले हियडा मझार
॥ ३॥र०॥ पुण्य हुवे तो पामियें, मन मान्या मित्त ॥
नयणवयण रलियामणा हो, पाले अविहड प्रीत ॥३
॥र०॥ खाणां पीणां खेलणां, न गमे मीठा नाद ॥ वात
विगत गुणगोठडी हो, लागे सहु निःस्वाद ॥४॥ र०॥
दुःख म कर तुं गोरडी, दुःख कीधे शुं थाय ॥ मूउं ते
जीवे नही हो, जो बरसां सो थाय ॥ ५ ॥ र० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर नारी तुज सारिखी, अवर न दीठी कांय ॥ सु
ख जोगव संसारनाहो, मुजशुं प्रीत बनाय ॥ ६ ॥
॥ र० ॥ राणी धणीयाणी करुं, मारुं घर तुज हाथ
॥ जीवंतां विरतूं नही हो, मुज तुज अविचल साथ
॥ ७ ॥ र० ॥ तेतो परदेशी हतो, जाति वंश नहीं
शुद्ध ॥ शुं फूरे छे तेहने, तुंही कुलवंत मुद्ध ॥ ८ ॥
॥ र० ॥ पानफूल विचें राखशुं, डुहविश नहीं किण
वात ॥ चाकरनी परें चाकरी हो, करशुं तुज दिन
रात ॥९॥र०॥ ले लाहो जोबन तणो, सफलो कर
अवतार ॥ तन धन जोबन प्राहुणो हो,जातां न ला
गे वार ॥ १० ॥ र० ॥ तुजशुं लागी प्रीतडी, तुज
विण रह्युं न जाय ॥ तुज मलवा मन उल्लसे हो,अव
र न कोइ सुहाय ॥ ११ ॥ र०॥ ते माटे तुजने कहुं,
समझ समझ गुणवंत ॥ हठ छोडी हितशुं मलो हो,
तुं कामिनी हुं कंत ॥ १२ ॥ र० ॥ तुजशुं मुजशुं प्री
तडी, सरजी सरजणहार ॥ जावि न मटे केहथी हो,
जो करे लाख प्रकार ॥ १३ ॥ र० ॥ तुं कोण हुं को
ण किहांथकी, आवी मलियो संच ॥ विधिनो ला
खियो दूतो हो, तुज मुज प्रेम प्रपंच ॥ १४॥ र० ॥
कोण करावे कोण करे, करता करेशुं होय ॥ ढाल थइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए बारमी, जिनहर्ष कहे तुं जोय॥ १ ५॥र०॥स०॥ २४ए॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी ते शेठना, कुमरी कीध विचार ॥ ए पापी मुज नांजशे, शीलरयण शणगार ॥१॥ कूड कपट करी राखवुं, शील अमूलक एह ॥ चिंतवे ए म मदालसा, वयण कहे सुसनेह ॥ २ ॥ सुणो शेठ साहिब तुमें, वयण कह्युं सुप्रमाण ॥ मरण थयुं प्री तम तणुं, दशदिन तेहनी काण ॥ ३ ॥ तुमने गम शे तेम होशे, चडी तुमारे हाथ ॥ परमेशर मेल्यो हवे, ताहरो माहारो साथ ॥ ४ ॥ उतावला सो बा वरा, धीरें सब कछु होय ॥ [redacted]सचे सो घडा, रुतु आवे फल होय ॥५॥ किणहीक नगरें जाइयें, मास दिवसने छेह ॥ पुरपतिनी लेइ आगना, आवीश ता हरे गेह ॥ ६॥ नाम म लेइश माहरुं, हुं छुं ताहरी नार॥ शेठ जणी कीधो खुशी, कुमरी बुद्धिविचार॥ ७॥

॥ ढाल तेरमी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ए देशी॥

॥ वृद्धा कहे कुमरी जणी रे, करियें शील जतन्न॥ त्रिभुवनमांहे दोहेलुं रे, लहेतां एह रतन्न रे ॥१॥ ब हेनी, सांभल माहारी वात ॥ शीलें अरि करी केशरी रे, न करे कोइ घात रे ॥ ब० ॥ ए आंकणी ॥ वायु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रतन सुप्रसादथी रे,तट लहियें कुशलेह ॥ तिहां जो मुज प्रीतम मले रे,तो रहीयें निज गेह रे ॥३॥ब०॥ न मलें तो आपण बेहुरे,लेशुं संजम भार ॥ वयण सुणी कुमरी इस्यां जी,हरखो चित्त मझार रे ॥ ३ ॥ ॥ ब० ॥ मानी वात मदालसा रे, कीधुं अंगीकार ॥ कुमर तणो हवे सांनलो रे,जेह थयो अधिकार रे ॥ ॥ ४ ॥ ब० ॥ जलनिधिमांहे कुमर पडयो रे, मकर ग्रह्यो ततकाल ॥ सायर तट ते आवियो रे, धीवर नाख्यो जाल रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ महामकर घरे आणि यो रे, कीधो तास विनाश ॥ मत्स्यउदरथी नीसखो रे, जीवित मान[redacted] ॥ ६ ॥ ब० ॥ देखी धीवर चिंतवे रे, मोहोटो नर ले एह ॥ सेवा खिजमत सहु करे रे, कुमर रहे तस गेह रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ हवे स मुद्दत्त शेठना रे, वाहण चाल्यां जाय ॥ वायुरतन पूजा करी रे, आण्या बे दिनमांय रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ तिहां अजाण्यां आवियां रे, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ रा जा नरवर्मा तिहां रे, जिनधर्मशुं अनुकूल रे ॥ ए ॥ ॥ ब० ॥ समुद्दत्त लेइ नेटणुं रे, लेइ कुमरी साथ ॥ रायसभायें आवियो रे, नेटयो अवनीनाथ रे ॥१०॥ ॥ ब० ॥ आदर नृपें बहु आपियुं रे, पूछ्यो कुशल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाप ॥ ए कोण नारी शेठजी रे,सुरकन्या गुण व्याप रे ॥ ११ ॥ ब० ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, चंद्रद्वीपें लही एह ॥ नारी एहनी स्वामिनी रे, सुंदर सुगुण सनेह रे ॥ १२ ॥ ब० ॥ तुम आदेशें माहरी रे,थाये एह कलत्र ॥ बोली तास मदालसा रे, नाखे किश्युं अखत्र रे ॥ १३ ॥ ब० ॥ राजा आगल पापीयो रे, नांखे एह अलीक ॥ राजा जो न्यायी हुवे रे, तो तु ज लावे नीक रे ॥ १४ ॥ ब० ॥ निर्लज शुं लाजे न ही रे, जपतो आलपंपाल ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थई रे,तेरमी ढाल रसाल रे ॥१५॥ब०॥सर्वगाथा॥२७१॥

॥ दोहा ॥

॥ लाज करी कुमरी कहे, वयण राय अवधार ॥ मुज पतिने एणे पापीयें, नाख्यो समुद्रमझार ॥ १ ॥ राय सुणी कोपें चडयो, घाल्यो कारागार ॥ माल पां च सय पोतनो, मूक्यो निजनंमार ॥ २ ॥ सांनल पुत्री नृप कहे, रहे तुं मुज आवास ॥ पुत्री मुज ति लोत्तमा, रहे तुं तेहनी पास ॥ ३ ॥ बेहेन तेह छे ता हरे, सखी तणे परिवार ॥ सुखें समाधें रहे सदा, चिंता दूर निवार ॥ ४ ॥ दीन जणी तुं दान दे, गोडि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयल दुःखदाह ॥ किणही तट लागो होशे, तो निर त करशे तुज नाह ॥ ५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ सुखें रहे कुमरी तिहां, मननी बीक सहु नागी रे ॥ राय मानी पुत्री करी, पुण्यदशा तस जागी रे ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ पंच रतन सुपसायथी, तिहां दान नि रंतर आपे रे ॥ श्रीजिनधर्म करें सदा, सहुने जिनधर्म थापे रे ॥ २ ॥ सु० ॥ सतीजनोचित कन्यका, ले नि यम मले नहिं सांइ रे ॥ त्यां सुधी नूयें सुयवुं, स्नानादिक न करवुं कांइ रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नारे वस्त्र न पहेरवां, प हेरुं नहीं फूलसुगंधो रे ॥ अंगविलेपण नवि करुं, तं बोल तजुं प्रतिबंधो रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ स्वादिम में तजवुं सही, नीलां फल जक्षण नवि करवां रे ॥ नियम ली यो सहु शाकनो, दूध दहीं मही परिहरवां रे ॥ ५ ॥ ॥ सु० ॥ सूस सहूं सुखडी तणुं, साकर गुड खांड न खावे रे ॥ पायस सरस न जीमवुं, जिमवा काजें न वि जावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ एक भुक्त नित्य जमीवुं, कारणवि ण किहांये न जावुं रे ॥ गोखें पण नवि बेसवुं, लोक स्थिति चित्त न लावुं रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ सरस कथा करवी नहीं, गाथा काव्य श्लोक सरागी रे ॥ कानें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण सुणवां नहीं, करवी तो कथा वैरागो रे ॥ ८ ॥ ॥ सु० ॥ वात न करवी पुरुषशुं, चित्राम पुरुष न विलोकुं रे ॥ नाटक ख्याल जोउं नहीं, जातुं चंचल चित्त रोकुं रे ॥ ए ॥ सु० ॥ एहवी ए लीधी आखडी, पियु न मले तिहां लगें पालुं रे ॥ ध्यान करुं नव कारनुं, पूजा करी पाप पखालुं रे ॥ १० ॥ सु० ॥ अन्य दिवस धीवर सहू, सार्थे करि उत्तम कुमारो रे ॥ कांहिक काम वशें मली, आव्या मोटपल्ली पा रो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ नरवर्मराय मंमावियो, पुत्री कारण आवासो रे ॥ अति मनोहर सात नूमियो, दीगं होय उल्लासो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ पुरनी शोना जोवतो, तिहां आव्यो कुमर सुजाण रे ॥ कामका रीगर तिहां करे, निजशास्त्र सहूना जाण रे ॥ १३॥ ॥ सु० ॥ गाम गाम ते वीसरे, खोटां घर किहां च णावे रे ॥ ढाल थइ ए चादमी, जिनहर्ष कुमार शीखावे रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ सर्वगाथा ॥ २ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर वास्तुविद्या विडुष,पण न मले अहंकार॥ सूत्रधारने शीखवे, सघलोही अधिकार ॥ १ ॥ चम त्कार चित्त पामिया,चिंते सहु सूत्रधार ॥ ए नर दीसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे सही, विश्वकर्मा अवतार ॥ २ ॥ जक्ति करे सहु कुमरनी, पासें राख्यो तास ॥ पुर खोल्यो सहु धीवरें, न जह्यो थया उदास ॥ ३ ॥ इहां आवी खोयुं रतन, अमनें पड्यो धिक्कार ॥ एम निज आतम निंदता, सहु गया तेणि वार ॥ ४ ॥ रायकुमरनी सान्निध्यें, पूरो थयो आवास ॥ सप्तनूमि सुरगृह जीश्यो, माहा ज्योति सुप्रकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥
॥ ए देशी ॥

॥ पूरु थयुं मंदिर कुमरीनु, जोवा आव्यो राय जी ॥ देखीने रलियायत हुउ, कीधो बहुत पसाय जी ॥१॥ उत्तम चरित्र कुमार निहाळ्यो, रूपकला गुणजोइ जी ॥ राजा नरवर्म चित्त विचारे, छे राजनपुत्र कोइ जी ॥ २ ॥ पू० ॥ एहवुं नृप चिंतवीने वलियो, कुमरी रमवा काज जी ॥ वनवाडीमांहे संचरियां, सइयर तणे समाजजी ॥ ३॥ पू० ॥ फशीयो जुयंग क्रीडा करंतां, ततक्षण थइ अचेत जी॥ उपाडीने मंदिर आणी, नयण धवल थयां श्वेत जी ॥ ४ ॥ पू० ॥ अंगो अंग महाविष व्याप्युं, गारुडविद्या जाण जी ॥ ते सहु तेडाव्या राजवीएं, उक्षे कुमरी प्राणजी ॥ ५॥ पू०॥ म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णि मूली मदुरा बहु आण्या,कीधा कोडि उपाय जी ॥ पण समाधि थायनहीं किमही, किमहीविष नवि जाय जी॥ ६ ॥पू०॥ नगरमांहे पडहो फेराव्यो, जे कोइ वि द्यावंत जी ॥ रायतणी कन्या जीवाडे, ते पसाय लहं त जी ॥ ७ ॥पू० ॥ अर्ध राज कुमरी नृप आपे,कुम र सुण्यो विरतंत जी ॥ पडह ग्रव्यो ततक्षण आवीने, उपगारी गुणवंत जी ॥ ८ ॥ पू० ॥ उत्तम रायसमीपें आव्यो, तेहिज नर ए होय जी ॥ आदर देईपासें बेसा ख्यो,स्वारथ मीठो होय जी ॥ ए॥ पू० ॥ एक स्वार्थी ने वली गुण मांहे, आदर लहे अपार जी॥ कन्या आ णी तिहां उपाडी, कुमर करे उपगार जी ॥ १० ॥ ॥ पू० ॥ मंत्र गणी पाणीशुं छांटी, कुमरी थइ सचेत जी ॥ कर जोडी राजा गुण गावे,धन्य धन्य तुं कुलके त जी ॥११ ॥ पू०॥ तें उपगार कियो मुज मोहोटो, दीधुं जीवितदान जी ॥ मुज कन्याने तें जीवाडी, विद्या तणा निधान जी ॥ १२॥ पू० ॥ तुजने शो उपगार क रुं हुं, करुणावंत कृपाल जी ॥ ए जिनहर्ष कन्या तुज दीधी, परणो पन्नरमी ढाल जी ॥१३॥पू०॥ ३०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विचारे चित्तमां,ए नर छे कुलवंत ॥ राज्य क

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्या देइ तेहने, हुं हवे रहुं निश्चिंत ॥ १ ॥ जोषी तुर त तेडावियो, जांखे एणि परें राय ॥ परणे कुमरी त्रि लोचना, वासर लगन बताय ॥ २ ॥ जोई पुस्तक टी पणुं, लगन कियो निरधार ॥ एह दिवस निर्दोष छे, जोतां दिवस हजार ॥ ३ ॥ घणे महोत्सवशुं नृपति, वर कन्या परणावि ॥ दीधो राज्यभंडार सहू,करमोच न प्रस्ताव॥४॥कुमरी काज करावियो,सतभूमियो आवा स ॥ राय दियो रहेवा भणी,तिहां भोगवे विलास ॥५॥

॥ ढाल सोलमी ॥ पंथीडानी देशी ॥

॥ दासीने कहे हवे मदालसा रे, प्रीतमनी कांइ न थइ सार रे ॥ सायर मांहे बूडयो ते सही रे, हवे हुं जीवुं शो आधार रे ॥ १ ॥दा०॥ दान दीयो में दी न डुःखी भणी रे, साते क्षेत्रें वावयुं वित्त रे ॥ श्रावक धर्म यथाशक्तें करे रे, जिनवरपूजा चोखे चित्त रे ॥ ॥ २ ॥ दा०॥ हवे मुज बहेनी कुमरी त्रिलोचना रे, तेहने देइ पंच रतन्न रे॥दीक्षा लेइश हुं जिनवरतणी रे, पालिश संयम करिय जतन्न रे ॥ ३॥ दा० ॥ दासी क हे सांभल तुं स्वामिनी रे, म कर म कर मनमांहे वि षाद रे ॥ कोइ परदेशी वखो त्रिलोचना रे, जेहनो सहु बोले यशवाद रे ॥ ४ ॥ दा० ॥ रूपकला गुण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेहमांहे घणारे,सांनलीयें बीए जेहनी ख्यात रे ॥खबर करुं जो दे तुं आगन्या रे, कुमरी कहे तो जो मोरी मात रे॥ ५ ॥ दा० ॥ आवी कुमरी घर उतावली रे, दीगो उत्तमचरित्र कुमार रे॥ गुप्ताकृति देखी नवि उ लख्यो रे, दीगो सुंदररूप आकार रे॥ ६ ॥ दा० ॥ कृण एक वात करी दासी वली रे, आवी निजकुमरी नी पास रे॥ सांनल माहारी वात मदालसा रे, दीगो पुरुष जइ आवास रे ॥ ७ ॥ दा० ॥ रूपें तो तुज नरतार सारिखो रे,पण कांइक आकृतिमां फेर रे॥ सां नली जाग्यो प्रेम मदालसा रे, वली मन लीधो पाछो घेर रें ॥ ८ ॥ दा० ॥ फट रे पापी मन शुं कियुं रे, किण उपर तें आण्यो राग रे,प्राणसनेही इहां आवी रहे रे, ऐहवुं किहांथी ताहरुं भाग्य रे ॥ ए ॥ दा० ॥ मिछा डुक्कड दीधो मदालसा रे,हवे कुमरें पूछी निज नारि रे॥ ए कोण वृद्धा इहां आवी हुती रे, कुमरी क हे सांनल नरतार रे ॥ १० ॥दा० ॥ वयण बोलावी बहेन मदालसा रे, परदेशिणी तेहनी छे दासी रे ॥ कुमर चिंते ते तो माहारी प्रिया रे,जाग्यो राग थयो उल्लासीरे ॥ ११ ॥ दा०॥ रोमांचित काया मन उ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लस्युं रे, नाम सुणी हरख्यो ततकाल रे ॥ पुण्य हुवे तो ते मुजने मले रे,ए जिनहर्ष शोलमी ढाल रे॥१ श॥

॥ दोहा ॥

॥ वली मनमांहे चिंतवे,में फोगट धर्यो राग ॥ कि हां ते नारी मदालसा, रूपकला सोनाग ॥ १ ॥ समु द्दत्त लेइ गयो,पापी मुजने नाखि ॥ जिहां होये ति हां जइ मलुं, पण दैव न दीधी पांख ॥ २ ॥ ए सु ख लीलासाहेबी, ए नारी ए राज ॥ पण नही ना री मदालसा,तो ए सुख किण काज ॥ ३ ॥ हइडामां ह मदालसा, मुख न जणावे वात ॥ माणे नारी त्रिलो चना, सुख विलसे दिन रात ॥ ४॥ सुख दुःख न क हे केहने, जे नर उत्तम होय ॥ संगतें नरम गमाय वो, वाट न लेवे कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी॥ श्रेणिकमन अचरिज थयुं ॥ए देशी ॥

॥ एण अवसर तिहां सांभलो, आगल जे उपगारो रे ॥ मध्यान्हें जिन पूजवा, जिनगृह गयो कुमारो रे ॥ १ ॥ एण० ॥ करे विचार त्रिलोचना, वार घणी थइ आजो रे ॥ प्रीतम हजीय न आवियो, किशें विल व्या काजो रे ॥२॥एण०॥ दासी मूकी देहरे, प्रीतम नरति लहाय रे ॥ सघले हो जोयुं फरी, पण लाधो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहिं किहांय रे॥३॥एण०॥ करे विलाप त्रिलोचना,पियु पाखें न सुहावे रे॥ उठे जल जेम माछली, तडफि तड फि दुःख पावे रे ॥४॥एण०॥ राजा पण चिंता करे, सुद्धि किहां नवि थाये रे॥ दुःख सहु कोइ करी रह्या, चिंतामां दिन जाये रे ॥५॥एण०॥ तेण पुरमांहे धनी रहे, महेश्वरदत्त मनाय रे॥ छप्पन कोडि कनकनी, निधि व्याजें व्यवसाय रे॥ ६ ॥ एण० ॥ वाहण ज लवट पांचशें, शकट पांचशें वहेतां रे॥ गृह विपण प ण पांचशें, पांचशें वखार समहिता रे॥७॥एण०॥ गोकु ल जेहने पांचशें,पांचशें गज मदमाता रे ॥ घोडा जा स विलायती,पांचशें चंचल ताता रे॥८॥एण०॥ पांचशें सुंदर पालखी, पांच लाख नृत्य जेहने रे॥ सुजट पांचशें उलगे,पुत्री नही पण तेहने रे ॥ ए ॥ एण०॥ केटलेएक दिने दीकरी, एक थइ गुणवंती रे ॥ चो शठ नारिकला जणी, सुंदररूप सोहंती रे ॥ १० ॥ ॥ एण० ॥ सहस्रकला नामें जली, मनमां शेठ विचा रे रे ॥ ए संसार असारता, पापें करी जीव जारे रे ॥ ११ ॥ एण० ॥ कन्या सारिखो वर मले, तो तेह ने परणावुं रे ॥ घरनो जार देई करी, संपद तास ज लावुं रे ॥ १२॥ एण० ॥ हुं दीक्षा लेउं जैननी, आ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तमने हितकारी रे ॥ आतम तारुं आपणो, मनमां वात विचारी रें ॥ १३ ॥ एण० ॥ वरनी करे गवेषणा, पण न मले मन गमतो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ,स त्तरमी ढालें नमतो रे ॥ १४ ॥ एण० ॥ सर्वगाथा ॥ ३ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछ्यु शेठ निमित्तियो, कोण कन्या वरदाख ॥ ज्ञान प्रयुंजी ते कहे, साची माने नाख ॥ १ ॥ महारा जा वर एहने, मलशे एकण मास ॥ सामग्री विवाहनी, करो सगाई खास ॥ २ ॥ महेश्वरदत्त खुशी थयो, करें महोत्सव नूरि ॥ लगन लीयो एक मासनो, वाजे मंग लतूर ॥ ३ ॥ स्वजन तेडावे दूरथी, मंगल अनुपम कीध ॥ मोहोटां तोरण बांधियां, नगरमांहे यश ली ध ॥ ४ ॥ धवल मल्हावे गोरडी, वरने देवा काज ॥ गज तुरंग वस्त्राभरण, करि राखे सहु साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥

॥ पुरमांहे थइ सघले वात, महेश्वरदत्त विवाह विख्यात ॥ पुण्यें पामियें ॥ एतो मन मान्या सुखशा त ॥ पु० ॥ सांभली राय सजायें राय, मनमांहे वि स्मय वली थाय ॥ १ ॥ पु० ॥ पहेले मांम्यो छे विवाह, वरनी वात न दीसे कांहि ॥ पु० ॥ कोण मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाराजा इहां आवशे, पुत्री जेहने परणावशे ॥ २ ॥
॥ पु०॥ राय विचारे एहवुं चित्त, धन्य धन्य एह महे
श्वरदत्त ॥ पु० ॥ एहवी लक्ष्मीनो जे धणी, वैराग्यें ते
हने अवगणी ॥ ३ ॥ पु० ॥ देइ जमाइने घर सार,
पोतें लेशें संजम जार ॥ पु० ॥ हुं पण त्रिलोचना
जरतार, शुद्ध करी द्युं राजजंमार ॥ ४ ॥ पु० ॥ दीक्षा
लेइ आतमकाज, सारुं जेम पामुं शिवराज ॥ पु० ॥
महेश्वरदत्तशुं कियो विचार, आपण थाशुं दीक्षा
धार ॥ ५ ॥ पु० ॥ पडहो नगर फेराव्यो राय, परदे
शीसें देशी थाय ॥पु०॥ त्रिलोचनावर निरति कहे, म
दालसा विरतंत जे लहे ॥६॥पु०॥ तेहने राजा आपे
राज, सहस्रकला कन्या शिरताज ॥पु०॥ पडहो नगर
निरंतर फरे, एहवां वचन मुखें उच्चरे ॥ ७ ॥ पु० ॥
मास एक हुउ जेटले, पडह ठव्यो पोपट तेटलें ॥
॥ पु० ॥ सूडो कहे वचन तेणि वार, जो जो राज
पुरुष अवधार ॥ ८ ॥ पु० ॥ लेजाउ मुज राज डुवा
र, राय जमाइ कहुं विचार ॥ पु० ॥ मदालसा पति
नी कहुं शुद्धि, पूर्व वृत्तांत कहुं मुज बुद्धि ॥ ए ॥ पु०॥
तुमने वात कहुं हुं आज, कन्या सहस्रकला लहुं रा
ज ॥ पु० ॥ पंखानुं पण जाग्युं जाग्य, नहीतो मुज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए किहांथी लाग ॥ १० ॥ पु० ॥ तेण पुरुषें कौतुक ने काज, राय कन्हें आव्यो शुकराज ॥ पु० ॥ रायस ना पूराणी घणुं, लोक सहु आव्युं पुरतणुं ॥ ११ ॥ ॥ पु० ॥ मदालसा आणी इहां राय, त्रिलोचना प रियचमां गाय ॥ पु० ॥ हुं ज्ञानी सघले विख्यात, तीन कालनी जाणुं वात ॥ १२ ॥ पु० ॥ राजा तिम हिज कीधुं सहु, नगर लोक मलियां तिहां बहु ॥ ॥ पु० ॥ बेठो सिंहासन नूपाल, कहे जिनहर्ष अढार मी ढाल ॥ १३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूत नविष्यत कालनी, केम कहेशे ए वात ॥ ज्ञा न किहांथी एहमां, पशु तणी ए जात ॥ १ ॥ राजा कहोने आपशे, पंखीने केम राज, राज्यपशु केम पाल शे, अचरिज थाशे आज ॥ २ ॥ कोइक छे ए देवता, कीधुं छे ए रूप ॥ नहीं तो पोपट पंखियो, जाणे किशुं स्वरूप ॥३॥ पहेली नारी मदालसा, तेहनोकहुं प्रबंध ॥ सावधान थइ सांनलो, सकल कहुंसंबंध ॥४॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ वात म का ढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ वारु नगर वाणारसी, मकरध्वज नूपालो रे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तास कुमर रलियामणो,उत्तम चरित्र दयालो रे ॥१॥
॥ वा० ॥ रीसावीने नीकल्यो,नमतो नरुअन्न आयो
रे॥ प्रवहण बेसी चालियो, धरतो हर्ष सवायो
रे॥ २ ॥ वा० ॥ गिरिजलकांत समुद्र विचें, तिहां
कूपकजल नरियो रे ॥ जलकारण मांहे गयो, बारी
मां उतरियो रे ॥ ३ ॥ वा० ॥ देवद्रुवन देखी क
री,पेठो मांही कुमारो रे॥ लंकापति राक्षसतणी,पुत्री
रति अवतारो रे ॥ ४ ॥ वा० ॥ निरुपम नाम मदा
लसा, परणी बाहेर आयो रे ॥ समुद्रदत्त वाहण
चढयो, जलविण सहु दुःख पायो रे ॥ ५ ॥ वा० ॥
पंच रत्न सुप्रसादथी, जल नोजन सुख आप्यां रे ॥
पर उपगारी एहवो, सहुनां संकट काप्यां रे ॥ ६ ॥
॥ वा० ॥ स्त्री धन देखी चित्त चल्युं, कुलमर्यादा
ठांमी रे ॥ समुद्रदत्त व्यवहारियें, नाख्यो जलधि उ
पाडी रे॥ ७ ॥ वा० ॥ तिमिंगल तट जइ रह्यो, मै
निक तास विदाख्यो रे ॥ निकलीयो ते जीवतो, मा
ह्मी चित्त विचाख्यो रे ॥ ८ ॥ वा० ॥ ए कोइ उत्तम
नर अहे, राख्यो तेहने पासें रे ॥ एक दिन पुर जोवा
नणी,आव्या मली उल्लासें रे ॥९॥वा०॥ पुत्री राय त्रि
लोचना,साप मशी जीवाडी रे ॥ परणी तिहां सुख नो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गवे, प्रीति परस्पर जाडी रे॥ १० ॥ वा० ॥ एक दिवस जिन पूजवा, कुमर गयो मध्यान्हें रे ॥ जिन पूजा विधिशुं करी,एक चित्तें एक ध्यानें रे॥ ११ ॥ ॥ वा० ॥ पुष्पमध्य दीठी तिहां, मदनमुद्रित मुख नलिका रे॥ उघाडी तंबोलीएं, सर्प मशी अंगुलिका रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ थइ अचेत पडयो तिहां, उत्तम कुमर ततकालो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ, उंग णीशमी ए ढालो रे ॥१३॥वा०॥ सर्वगाथा ॥३७९॥

॥ दोहा ॥

॥ तुजने नारी मदालसा,तणी कथा कही एह ॥ तु ज कुमरी नरतारनी,सुधि कही में तेह ॥१॥ सत्य प्रति ज्ञा ताहरी, दे मुजने हवे राज ॥ सहस्रकला कन्या सहित, माहरे एहशुं काज ॥ २ ॥ हुं तिर्यंचसुख नो गवुं, राज्य तणुं निशदीस ॥ सहस्रकला परणावजो, तुजने युं आशीष ॥ ३ ॥ राय कहे पंखी नणी, केम देवराए राज॥ कीर कहे उत्तम नणी, वचन तणी छे लाज ॥४ ॥ दइश तो लेइशखरो, नहींतो जइश मुज ठाण ॥ वृत्ति करीश फल फूलनी, थाउं तुज कल्याण ॥ ५ ॥ मायावी माणस हूये, कीर कहे सुण राय ॥ काम करी पोतातणुं, मुकर जाये कृण मांय ॥ ६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न घटे मुज रहेवुं इहां,तुं तो काढे इंद ॥ काम सर्यां दुःख वीसर्यां, वैरी हूआ वैद ॥ ७ ॥ एम कही सू डो उडियो,नृप राख्यो कर साहि॥ धीरोधा तुज आपी शुं, अर्त्ति म धर मनमांहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ तुंतो मारावालम रे गुज
रातीरा ॥ ए देशी ॥

॥ तुंतो माहारा वाहला रे पंखी सूवटा,तुने विन ति करुं कर जोडी रे ॥ जीवे बे कुमर के नहीं, कांहि गांठ हैयानी बोडी रे ॥१ ॥ तुं० ॥ वलतुं शुक नांखे रे राजवी, मुजमांहे नहीं कांइ कूड रे ॥ तुज आगल प्रथम कथा कही, तो न्याय पडी मुख धूड रे ॥ २ ॥ तुं० ॥ एटली जो कथा कह्यांथकां, मुजने तें नाप्युं राज रे ॥ तो आगल कहे शुं थाशे सही, शुं थाशे माहारां काज रे ॥ ३ ॥ तुं० ॥ कुमरी कहे ताम मदालसा, तुज पाये पडुं बुं कीर रे ॥ मुज उ पर महेर धरी करी,कर नीवेडो खीर नीर रे ॥४॥तुं०॥ राजन कुमरी तुमें सांजलो, कहुं सापें मश्यो कुमार रे ॥ धरणी पडियो नहीं चेतना, विष व्याप्युं अंग अपार रे ॥ ५ ॥ तुं० ॥ नामें अनंगसेना गणिका ज णी, जाणे अनंगसेना साक्षात रे ॥ सहू नरनां रे मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न मोडयां जिणें, तेहनी शी कहियें वात रे ॥ ६ ॥ तुं० ॥ रूपें तोरें जींती अपछरा, रति जींती नारी अंग रे ॥ नागकुमरी रे जींती पातालनी, कोइ मांमी न शके जंग रे ॥ ७ ॥ तुं० ॥ ते गणिका आवी किण कारणें, तेणें दीगो पडयो कुमार रे ॥ उपाडीनें निजघर ले गइ, एतो मशियो ले विषधार रे ॥ ८ ॥ तुं० ॥ विष अपहारी मणि आणीने, जलमांहे पखाली तेह रे ॥ ते जलशुं रे सींचे कुमरने, निर्विष थयो ततक्षण देह रे ॥ ए ॥ तुं० ॥ हुंतो तूठयो रे गणिका तुज नणी, माग माग रूचे तुज जेह रे ॥ मागयो द्यो जो मुज साहिबा, सुख विलासो धरीय सनेह रे ॥ १० ॥ ॥ तुं० ॥ तेणे वेश्या रे मंदिर राखियो, चोथी भूइ जिहां चित्रशाल रे ॥ ते साथें रे सुख संजोगना, जोगवे दिन रात रसाल रे ॥ ११ ॥ तुं० ॥ तेणे गणिका रे तेहने गुण कीयो, गुण मान्यो दीधो मान रे ॥ तुजने संजलावी सद्धु कथा, मुज नापे तुं राजदान रे ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुजथी तो रे तेह कुमर जलो, वेश्याशुं मांमयो घरवास रे ॥ निजवच निष्फल कीधुं नहीं, धन्य धन्य तेहने साबाश रे ॥ १३ ॥ तुं० ॥ निज वाचा रे जे पाले नहीं, ते माणस नही पण ढोर रे ॥ जिनहर्ष थइ ढा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ल वीशमी, शुक बोल्यो एणिपोरें जर रे ॥१४॥ तुं०॥ सर्वगाथा ॥ ४०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति हूउं महाराज तुज, में पाम्युं सहु राज॥ निरपराध मुज जाण दे, नहीं राज्यशुं काज ॥ १ ॥ लान थयो इहां एटलो, गलशोषण जे काय ॥ पोंक न खाधो कर बल्या, घरना चूक्या घाय ॥ २ ॥ वैद्य नणी कल्याण हुउं, दाक्षिण्य मूकी जेय ॥ पहिलां ध न लेइ पछें, गोली औषध देय ॥ ३ ॥ दाक्षिण्य मेल्ही नवि शक्यो, हुं मूरख शिरताज ॥ सर्व कथा कहीने प छें, मागण लाग्यो राज ॥ ४ ॥ सांनल शुक राजा कहे, पूरण रोग न जाय ॥ वैद्य कह्युं धन नवि ल हे, तुं केम राज लहाय ॥ ५ ॥ तें अरधी कही वार ता, पूरो न कह्यो नेद ॥ मूढ उतावल कां करें, था शे सफल उमेद ॥ ६ ॥ अनंगसेना गृह जाइने, कुमर निहाली आज ॥ कथा सुणी सहु आगली, तुजने देइश राज ॥ ७ ॥ चलु जेवारें आवियुं, जमणनी नांगी आश ॥ तेम तुज वचन प्रतीत ले, बेसो कृण आवास ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ राये चाकर मोकल्या रे, जोवा गणिकारे गेह ॥ जइ जोजो घर तेहनुं रे, कुमर न दीठो तेहो रे ॥ ॥ १ ॥ ए शुं शुक कह्युं, वेश्या घर केम जायो रे, उत्तम नरथकी, एतो काम न थायो रे ॥ २ ॥ ए० ॥ ताहरा घरमां सांजल्यो रे, उत्तम चरित्र कुमार ॥ तें राख्यो ठे कहे किहां रे, साचुं बोल गमार रे ॥ ३ ॥ ॥ ए० ॥ शुं जाणुं रे जाइयो रे, कुमर तणी हुं सार ॥ राय जमाइ माहरे रे, शे आवे आगारो रे ॥४ ॥ ए०॥ घर खोली जोवो तुमें रे, शो भ्रम राखो रे आम ॥ हाथ तणा कांकण जणी रे, आरीसो शुं काम रे ॥ ॥ ५ ॥ ए० ॥ जोइ पाठा आविया रे, नृपने कह्युं वृत्तांत ॥ कुमर नहीं गणिका घरें रे, राजा थयो सचिंत रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ गहन वीत नवि जाणियें रे, ठे कोइ देव चरित्र ॥ राय कहे शुकरायने रे, किशुं पजावे मित्तरे ॥ ७ ॥ ए० ॥ तुज विण निरत न का पडे रे, कहे किहां मुज जामात ॥ किस्युं गुमानी थइ रह्यो रे, कहेने साची वातो रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ सूडो कहे राजन सुणो रे, धूरत जाण्यो रे तुज्क ॥ बालक जेम जोलावियो रे, तेम जोलाव्यो मुज्क रे ॥ ए ॥ ए० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम ते उत्तम हुवे रे, मध्यम कदिय न हूंत ॥ अग र दहे तन आपणुं रे, परिमल जग पसरंत रे ॥१०॥ ॥ ए० ॥ तुं उरसिया सारिखो रे, हुंतो सुखड सार ॥ घासंतां घासे नहीं रे, धिक् तेहनो अवतारो रे ॥ ॥ ११ ॥ ए० ॥ तुजथी फल पाम्युं नही रे, फोकट कियो रे प्रयास ॥ सांभल हवे तुं सहु कहुं रे, सहुने थाये उल्लास रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ अनंगसेना मन चिंतव्युं रे, अनुपम रूप सौभाग्य ॥ राय जमाइ पण सही रे, मलियो माहरे भाग्य रे ॥१३ ॥ ए० ॥ जनम लगें ए माहरे रे, थाये जो भरतार ॥ मानव भव सुकृतारथो रे, भोगवुं भोग अपारो रे ॥ १४ ॥ ए०॥ मुज घरथी जाये नही रे, करियें तेह उपाय ॥ दोरो मंत्री सूत्रनो रे, बांध्यो तेहने पाय रे ॥ १५ ॥ ए०॥ तेहनो कीधो सूवटो रे, नारी चरित्र विशाल ॥ एम जिनहर्ष राख्यो घरें रे, एकवीशमी ए ढालो रे ॥ १६ ॥ ॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ४२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पोपट घाल्यो पांजरे, रात्रें दोरो छोड ॥ पुरुष करी सुख भोगवे, सफल करे मन कोड ॥ १ ॥ दिवसें वली पोपट करे, निशि दिन एम करंत ॥ सूडो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनमां चिंतवे, ए शुं थयुं वृत्तंत ॥ २ ॥ मनुष्य थकी तिर्यंच थयो, में श्यां कीधां पाप ॥ आ जव तो नवि सांजरे, शे पाम्या संताप ॥ ३ ॥ हा हा जाएयुं में हवे, पिता अदीधी नार ॥ परणी कुमरी मदाल सा, पांच रतन ग्रह्यां सार ॥ ४ ॥ ए बे पाप कियां इहां, तेथी मरयो जुयंग ॥ वली आव्यो वेश्यावरे, नरथी थयो विहंग ॥ ५ ॥ एतो पाप तणा कुसुम, फल आगमशुं प्रमाण ॥ तो नरकें पडवुं सही, ए म निंदे अप्पाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ साधुजी जलें पधा
रया आज ॥ ए देशी ॥

॥ अनंगसेनाना रागथी जी, रह्यो तिहां एक मा स ॥ मेल्ही उघाडुं पांजरुं जी, गइ किण काज विमा स ॥ १ ॥ नरेशर सांजल एह विचार ॥ अचरिजनो अधिकार, सुणतां हर्ष अपार ॥ न० ॥ पडहतणी उद्घोषणाजी, सांजली नगर मोझार ॥ तिहांथी उ डी आवियो जी, पडह हव्यो तेणि वार ॥ २ ॥ न० ॥ ते राजन हुं सूवटो जी, में सहु कह्यो विचार ॥ रा जा एहवुं सांजली जी, हर्षित थयो अपार ॥ ३ ॥ ॥ न० ॥ पगथी दोरो छोडियो जी, कुमर थयो तत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काल॥ सहुने अचरिज उपन्युं जी, थयो प्रमोद विशा
ल ॥ ४ ॥ न० ॥ हरखी कुमरी मदालसा जी, नय
णें नाह निहाल ॥ पाम्यो हर्ष त्रिलोचना जी, विर
हाग्नि दुःख टाल ॥ ५ ॥ न० ॥ परणावी बहु प्रेम
शुं जी, शेठ महेश्वरदत्त, सहस्रकला निज कन्यका जी॥
खरची बहुलुं वित्त ॥ ६॥ न० ॥ तीन नारी पुण्यें म
ली जी, सुरकन्या अवतार ॥ अनंगसेना चोथी थइ जी,
रूपतणो भंमार ॥ ७ ॥ न० ॥ राजा तेडी आरामिकी
जी, तेहने दीधी मार ॥ फूलमांहि नलिका धस्यो जी, पू
छ्यो सर्पविचार ॥ ८॥ न० ॥ मालिनी कहे राजन सु
णो जी, तुम आगल कहुं साच ॥ समुद्रदत्त व्यवहारियो
जी, खोटो जेहवो काच ॥ ए ॥ न०॥ तेणें पापी मु
जने कह्युं जी, देश्श तुज दीनार ॥ परखीने तुज पांच
शें जी, कुमर भणी तुं मार ॥ १० ॥ न० ॥ लोभें
मुज लक्षण गयां जी, में कीधुं ए काज ॥ पापी मति
हुवे नारिने जी, केहनी नाणे लाज ॥ ११ ॥ न० ॥
राजा रोषातुर थयो जी, मारो पापी तेह ॥ मालणी प
ण मारो जइजी, हुकुम दियो नृप एह ॥ १२ ॥ न०॥ ते
लेइ मारण निसस्याजी, केहनी नाणे लाज ॥ करे राय
ने विनति जी, मकरध्वजनो पूत ॥ १३॥ न०॥ होण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हार निश्चें हुवे जी,एहोनो शो दोष ॥ कहे जिनह र्ष बावीशमी जी, ढालें नृप मनरोष ॥ १४ ॥न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूकुं नहीं ए जीवता, एहनी करवी घात ॥ जाण्यो नहीं एणें एटलो, रायतणो जामात ॥ १ ॥ एक घर माकण परिहरे, न करे तास विनाश ॥ मुज घरथी ए नवि टल्यां, बेनो करवो नाश ॥ २ ॥ विनय करी नृपने कहे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ महाराय जवितव्यता, करवो एह विचार ॥ ३ ॥ वांक न कांइ शेठनो, मालिणी नहीं कांइ वांक ॥ टले नही जे विधि लख्या, सुख दुःखना शिर आंक ॥ ४ ॥ इं द्र चंद्र नागेंद्र नर,मोहोटा जेह मुणिंद ॥ कियां कर्म सहु जोगवे, छूटे नही नरिंद ॥ ५ ॥ किणशुं कीजें आमणो, किणशुं कीजें रोष ॥ केहनो दोष न काढियें, कर्मतणो ए दोष ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ मोरियाना गीतनी ॥ देशी ॥ राये राणा रमे रंकुआ ॥ ए देशी ॥

॥ पाय पडी नृप तणे रे कुमार, विनति करीय समजाविया जी ॥ एहनुं कीधुं पामशे एह, शेठ माणण बे मेल्हावियां जी ॥ १ ॥ शेठनुं सहु धन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लीध,मालणी काढया निज देशथीजी ॥ पहेलां पण नृप मनमां वैराग्य, राज्य ग्राहक सुत पण नथी जी ॥३॥ देइ जमाइने राज्यनंभार,राय चारित्र शुन आद रयो जी ॥ महेश्वरदत्त पण रुद्धि समृद्धि, सद्गु देइ शुद्ध संजम धर्यो जी ॥ ३ ॥ महेश्वरदत्त नृप कियो विहार,संजम पाले निज निर्मलो जी ॥ शास्त्र सिद्धां त नण्या गुरु पास, जेहनो यश थयो उज्ज्वलो जी ॥ ॥ ४ ॥ समुद्र पर्यंत थयुं नृप राज्य, चुल्ल हिमवं त लगें आगन्या जी ॥ उत्तमचरित्र थयो मा हाराज, जेहने चार घरणी धन्या जी ॥ ५ ॥ भ्रमरके तुनी सांभलो वात, षष्ठिलक्ष राक्षसनो धणी जी ॥ तेणे नैमित्तिक पूछिया ताम, किहां मुज अरि नाखुं उखणीजी ॥ ६ ॥ ते कहे सांभल राक्षस नाथ, पुत्री तुज परणी मदालसा जी ॥ पंच रतन तुज सार नंभा र, तेह लइ गयो शुन दिशा जी ॥ ७॥ मोहोट पल्ली नामें वेलाकुल, सकलतट तणो स्वामी थयो जी॥राय विद्याधर सद्गु नम्या पाय,पुण्यथी राज्य मोहोटो लह्यो जी॥ ८ ॥ सांभली राक्षस एह विचार, चिंतवे चितमां एहवुं जी ॥ देखो अलंघ्यनवितव्यता एह, विधि ल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयुं ते थयुं तेहवुं जी ॥९॥ समुइमां शैलस्थितकूप इ वार, देवता पण जइ नवि शकेजी ॥ गहन पाताल भुवनें तिहां जइ,परणी मुज कुमरी नूचरथकेजी॥१०॥ पंचरत्न मुज जीवित प्राय, ले गयो हवे किश्युं कि जियें जी ॥ ज्ञान नैमित्तकतणुं प्रमाण,नाग्य नूचर स लहीजीयें जी॥११॥एकलो शून्य दीपें हतो एह,तिहां पण मनें जींत्यो एणे जी ॥ कहे जिनहर्ष पुण्यें फली आश,ढालत्रेवीशमी ए कहीज॥१२॥सर्वगाथा४६३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तो ए राजा थयो, पंचरतन सुप्रजाव ॥ ह य गय पायक नट कटक, माहारो न लागे दाव ॥१॥ हवे जीपी हुं केम शकुं, केहनो राखुं शोष ॥ जे कि रतारें वडा किया, तेहथ्युं केहो रोष ॥ २ ॥ प्राणें जा स न पोहोंचियें, तेथुं किश्यो संग्राम ॥ तेहने नमियें जाइने, तो विणसे नहीं काम ॥ ३ ॥ काज विचारी जे करे, तेहनुं सीजे काम ॥ अविचाखुं धांधल पडे, घटे महत्वने माम ॥ ४ ॥ हवे जमाइ ए थयो, क लहतणुं नहीं गाम ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, राखुं किस्यो विराम ॥ ५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोवीशमी ॥ मोरा साहिब हो श्री शीतल नाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ एहवुं चिंतवी हो ते सूकी संग्राम के, राक्षसपति आव्यो तिहां ॥ करी प्रणिपत हो नृपने तजी मान के, स्नेह सहित मलिया इहां ॥ १ ॥ पुण्याइ हो अधिकी संसार के, उत्तमचरित्र तुमारडी ॥ मुज पुत्री हो अपछर अवतार के, विधियें तुज कारण घडी ॥ २ ॥ जोरावर हो सुर असुर नरिंद के, नावि आगल को नहीं ॥ फोकटनो हो वहीयें मन गर्व के, महारो न मे नाग्यो सही ॥ ३ ॥ तुं माहारी हो पुत्रीनो कंत के, थयो जमाइ माहरो ॥ तुज साथें हो माहरे हवे प्रीत के, रूडो वांछुं ताहरो ॥ ४ ॥ मन केरी हो नागी सहु नीति के, ससरो जमाइ बेहु मल्या ॥ मुज पुत्री हो सरिखो वर एह के, मुह माग्या पासा ढल्या ॥ ५ ॥ पुत्रीने हो जइ मलियो बाप के, बाप संघातें पुत्री मली ॥ हियडाशुं हो नीडी हेत आणी के, पुत्रीनी पूगी रली ॥ ६ ॥ शिर धारी हो आणा लंकेश के, उत्तम चरित्र नरेशनी ॥ लंकानुं हो देइने राज्य के, देइ न लामण देशनी ॥ ७ ॥ मोकलीयो हो राक्षसपति राय के, सहुने आणंद उपनुं ॥ एक दिवसें हो बेठा द

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रबार के, दूत आव्यो तिहां नूपनो ॥ ८ ॥ आणीने हो रायने दियो लेख के,राय उघाडी वांचीयो ॥ मांहे लखिया हो ते बोल अमोल के,जेहथी टाढो दुवे हियो ॥ ए ॥ स्वस्तिश्री हो प्रणमी जगदीश के, वाणा रसीथी मन रसे ॥ मकरध्वज हो लिखितं माहाराय के, उत्तमचरित्र कुमर दिसें ॥ १० ॥ आलिंगे हो हरखें सस्नेह के, कुशल खेम वरतुं इहां ॥ तुमकेरा हो वांछुं सुखखेम के, कागल दीयो तो जिहां ॥११॥ जिण दिनथी हो तुं चाल्यो परदेश के,खबर करावी में घणी ॥ दोडाव्या हो केडें अस्वार के,निरत न पामी तुंम तणी ॥१२॥ चाल्या केडे हो पुरपाटण गाम के,पर्वत द्वीप नमंतडां ॥ किहां न सुणी हो वत्स ताहरी वात के,निशि दिन वाट जोवंतडां ॥१३ ॥ निःस्नेही हो तुं तो थयो पुत्त के,मात पिताने अवगणी॥ मेल्ही ने हो गयो तु निरधार के, हियडे अग्नि दीधी घणी ॥ ॥ १४ ॥ तोरुनें हो मन नांहिं दुःख के, मात पिता दुःख करी मरे ॥ पूरी थइ हो चोवीशमी ढाल के, कही जिनहर्ष नली परें ॥ १५ ॥ सर्वगाथा॥ ४०३॥

॥ दोहा ॥

॥ तथा अहं वार्द्धक थयो, तुज विजोग न खमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य ॥ तुज विरहें व्याकुल थयो, दिवस दोहिलो जाय ॥ १ ॥ तुजनें अमे न दूहव्यो, कुवचन न कह्युं कोइ ॥ रीसावी नीकली गयो, ते पछतावो होय ॥ ॥ २ ॥ राज धुरंधर तुं कुमर, तुज उपर सहु मांड ॥ निराधारां मूकी गयो, नलो गयो तुं छांमि ॥३॥ लोक मुखें में सांजल्यो, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ उत्तमचरित्र राजा थयो, जाग्य थयुं अनुकूल ॥ ४ ॥ गाढा र लीयायत थया, उल्लसीयां अम प्राण ॥ पण लेख दर्शणें आवजे, जेम थाये कल्याण ॥५ ॥ हुं घरडो बूढो थयो, मुजथी न चाले राज ॥ राज देशने तुज नणी, हुं सारुं निज काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कलालणी तें माहारो राजन मोहियो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरजी लेख वांची मन रंगशुं हो लाल, ढील म करजे पुत्त ॥ कु०॥ पाणी अपीत पधारजो हो लाल, आव्यां रहेशे सूत ॥ कु० ॥ १ ॥ वेहेलो अहिंयां आवजे हो लाल ॥ कु०॥ तुज विण शूनो देशडो हो लाल, तुज विण शूनुं राज्य ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो डगडो हो लाल, आव्यां रहेशे लाज ॥ कु० ॥ २ ॥व० ॥ कु० ॥ राज धुरंधर तुं सही हो लाल, तुज विण के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुं राज ॥कु०॥ तुंकुलदीपक सेहरो हो लाल,तुं सहुनो शिरताज ॥ कु० ॥३॥व०॥कु० ॥ जो चाहे सुख मो क्षणी हो लाल, वांछे मुज कल्याण ॥ कु० ॥ तो वहे लो आवे इहां हो लाल,टाढां होय मुज प्राण ॥कु० ॥४॥ व० ॥कु० ॥ भाग्यवंत तुं दीकरो हो लाल, विनयवंत गुणवंत ॥ कु० ॥ मावित्रांने मूकीने हो लाल, बेठो जइय निचिंत ॥ कु० ॥ ५ ॥ व० ॥ कु० ॥ राज्य लहुं अमें सांनल्युं हो लाल,मोटपक्षी वेलाकुल ॥ कु०॥ मनमां रलियायत थइ हो लाल, भाग्य थयुं अनुकूल ॥ कु० ॥ ६ ॥ व० ॥ कु० ॥ तुजनें शुं लखियें घणुं हो लाल, तुं सहु वातें जाण ॥ कु० ॥ थोडामां समजे घणुं हो लाल, आव्या तणां वखाण ॥ कु० ॥ ७ ॥ व० ॥ कु० ॥ हैयुं भराणुं हरख शुं हो लाल, वांची सहु समाचार ॥ कु० ॥ ततक्ष ण बूटी लोयणें हो लाल, आंसू केरी धार ॥ कु० ॥ ॥ ८ ॥ व० ॥ कु० ॥ बाप भणी डुःख में दियो हो लाल, हुं थयो पुत्त कपुत्त ॥ कु०॥ खाये हियडुं फोलीने हो लाल, माय तणो जिम लूत्त ॥ कु० ॥ ए ॥ व०॥कु०॥मंत्रीसर परधानने हो लाल,राय जलावी राजा॥कु०॥नारी चार निज सैन्यशुं हो लाल,चाल्यो स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इ लेइ साज ॥ कु० ॥ १० ॥ व० ॥ कु० ॥ वाणार सी नयरी तणी हो लाल, लशकर साथें अखूट ॥ कु० ॥ अखंड प्रयाणें वाटमां हो लाल, चलि आव्यो चित्रकूट ॥ कु० ॥ ११ ॥ व० ॥ कु० ॥ म हासेन राजा सांभल्यो हो लाल, उत्तम चरित्र नरिं द ॥ कु० ॥ आव्यो ले सामो जइयें हो लाल, मलियें मन आनंद ॥कु०॥१२ ॥व० ॥ कु० ॥ कटक सुभट शुं जइ मल्यो हो लाल, आव्या नगर मझार ॥ कु० ॥ ढाल थइ पच्चवीशमी हो लाल, कहे जिनहर्ष वि चार ॥ कु० ॥ १३ ॥ व० ॥ सर्वगाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माहासेन हेतशुं मल्यो, कर जोडी कहे एम ॥ मित्र नलें पाउ धारिया, वर्त्ते ले सुख खेम ॥१ ॥ तुम सुपसायें कुशल ले, आव्यो मलवा काज ॥ कृ पा करि मुज उपरें, माहाराजा ल्यो राज ॥ २॥ मेह तणी परें ताहरी, निशदिन जोतो वाट ॥ मुज पुण्यें तुं आवियो, आज थया गहगाट ॥ ३ ॥ उत्तमचरित्र नरिंदने, राजा देई राज ॥ पोतें संयम आदस्यो, सा स्यां आतमकाज ॥ ४ ॥ केटला एक दिन तिहां र ह्यो, मलवाने मेदपाट ॥ आण मनावी आपणी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाट नोट करणाट ॥ ५ ॥ कामदार पोता तणा, मे
ल्ही चल्यो नूपाल ॥ आव्यो गोपाचलगिरें, केवी के
रो काल ॥ ६ ॥ वीरसेन राजा थयो, कटकतणी सु
णी वात॥ चार अक्षोयणी सैन्यशुं,परवरियो सुप्रजात
॥ ७ ॥ सीमा आवी उतस्यो, मूक्यो सन्मुख दूत ॥दू
त कह्युं मत आवजे, जो थाये रजपूत ॥ ८ ॥ जो
कांकल करवा मतें,राखे जो रजवट्ट॥तो वहेलो थइ आ
वजे, थाशे बहु खलखट्ट ॥ ए ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मुज लाज वधारो रे, तो राज प
धारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणि वयण विचित्रो रे,ए तो थयो शत्रो रे,हवे
उत्तमचरित्रो,युद्ध करण चढ्यो रे ॥ बे लशकर मली
यां रे, मांहो मांहे अडियां रे, सहु सुनट आफलि
या, कांकल कपड्यो रे ॥ १ ॥ रण घोर मंमाणुं रे,
जाय न छंमाणुं रे, उखाणो खोजा पाडा, नेंसा आ
थडे रें ॥ शर चिहुं दिशि बूटे रे, बगतर कस तूटे रे,
वच्चें नाल वछूटे, धरती धडहडे रे ॥ २ ॥ हथनाल
हवाइ रे, आवाज मचाइ रे, वच्चें आवी बरछीना घा
व,लागे घणा रे॥सूरा एक फूके रे,गयघड आलूकें रे,
रवि सूके नही, अंधारुं बिहामणुं रे ॥ ३ ॥ घणा रो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षें मारे रे,तींखी तरवारें रे, जे हारे ते जायो नही, रजपूतणी रे ॥ हाको हाक वाजे रे, गयवीर जेम गाजे रे, रखे लाजे सात,परियागत आपणी रे ॥४ ॥ खलखंभे विहंभे रे, पग एक न छंभे रे, वली आवी मंभे रे, साहामा अरि हैये रे ॥ देखीने कोपे रे, नखा क्रोधा टोपें रे, नवि लोपे रणवट, पग पाछा नवि दिये रे ॥ ५ ॥ जूझे एम शूरा रे, हथियारें पूरा रे, बलवंत सनूरा, घाव साहामा लीये रे॥ राणीना जाया रे,हणवाने धाया रे, तेम आया रे राया, जयहाथा दीये रे ॥ ६ ॥ निशाणें घाय रे, वाजे शरणाय रे, सिंधूडे मचाइ रे, वेढ बिहामणी रे ॥ तरवारें त्राछे रे, नालंता पाछे रे, तेम शूरा छे ते जूझे, साम्हे अणी रे ॥ ॥७॥ उलटचा वरसाला रे, वहे लोही खाला रे, मछराला मतवाला,हठ मेल्हे नही रे ॥घायें घूमंता रे,केइ धड जूझंता रे,रुंभ मुंभ हसंता,जयकारी सही रे ॥ ॥ ८ ॥ माटीनुं घाय रे, हथियारसबाह रे, मुज सामो आय रे, जो बलवंत छे रे॥स्वामी बपुकारे रे,तुं वैरी संहारे रे, शूरोशिरदार रे, तुं सम कोण अछे रे ॥ ॥९॥ लखगाने लडाया रे, लखगाने लडिया रे, रडवडीया रे, तुंभ घणां सुभटो तणां रे॥ कांकल देखेवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रे, जोगिणी बल देवा रे,तेम करण बल लेवा रे, भूत फरे घणां रे ॥ १० ॥ एम महायुद्ध मातो रे, वारे न हीं थातो रे,संसरातो रे,पाछो कोइन उसरे रे॥ पुण्याइ जोरें रे, ते अधिके तोरें रे, निज पराक्रम फोरे रे, चिंते तेम करे रे ॥ ११ ॥ नृप उत्तमचरित्रो रे, बद्धु पुण्यविचित्रो रे, निजशत्रु रे बांध्यो, झाली जीवतो रे ॥ वीरसेन लजाणो रे,मुजथी सपडाणो रे, मुज जी धो घाणो रे, जे सबलो हतो रे ॥ १२ ॥ निज आण मनायो रे, छोडयो ते रायो रे,वैराग्य आयो रे, मन वीरसेनने रे ॥ छवीशमी ढालें रे,जिनहर्ष निहालें रे,स द्धु टालें रे,द्वेषने निज मनें रे॥१३॥ सर्वगाथा ॥५२४॥

॥ दोहा ॥

॥ मान मलिन थयुं माहरुं, जो रह्यो राजमझा र ॥ सुखकारण जे जाणियें, ते सद्धु दुःख दातार ॥ १ ॥ संपदमां आपद वसे, सुखमांहे दुःख वास ॥ रोग वसे निज जोगमां, देह मरण आवास ॥ २ ॥ ए संसारी जीवने,बधन छे धन दार ॥ मूरख माने सुख करी, मधुलेपी खझधार ॥ ३॥ मान रहे नहीं केहनुं, एणे संसार मझार ॥ जींती कोण जाइ शके, एम नृ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प करे विचार ॥४॥ पहेले हुं चेत्यो नहीं, धर्म नखे ल्योदाव॥तो आवी उत्तमचरित्र, नेंजे दीधो घाव॥५॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥

॥ ए कारण वैराग्यनो, रायतणे मन आयो रे ॥ राज्यऋद्धि बोडी करी, करे धर्मउपायो रे ॥१ ॥ ए०॥ पुण्यवंत नर एह बे, ए नर अनमी नामें रे॥तो माहारी प्रभुता हवे, एहिज भूपति पामे रे॥ २ ॥ ए० ॥ वी रसेन नृप एहवो, मनमां करिय विचारो रे ॥ उत्तमच रित्र भणी कहे, ए ल्यो राज भंभारो रे ॥३ ॥ए० ॥ हुं दीक्षा लेइश हवे, बोडी राज्यभंभारो रे ॥ एह लख्युं तुज भाग्यमां, संग्रह्य तुं हितकारो रे ॥ ४॥ए०॥उत्तम चरित्र नरिंदने, देइ राज्यविख्यातो रे ॥ वीरसेन संय म लियो, सहस्रपुरुष संघातो रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ केट लाएक दिन तिहां रही, देश मनावी आणो रे ॥ पुण्यतणे सुपसाउले, पग पग लहे निरवाणो रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ चतुर राय तिहांथी चल्यो, पोताने पुर आयो रे ॥ बापें बहु महोत्सव करी, पुरप्रवेश करायो रे ॥७॥ ए० ॥ कुमर पिता पायें नम्यो, पुत्रपिता हेतें मलिया रे॥ जननी उरछुंभीडियो, आज मनोरथ फलियारे॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए०॥ चार वहू पाये पडी, सासु दे आशीषो रे ॥ अविचल जोडी तुम तणी, फलज्यो आश जगीशो रे ॥ ए ॥ ए० ॥ मात पिता हर्षित थयां, हर्ष्यो सहु परिवारो रे ॥ राय करे अनुमोदना, ऐ ऐ पुण्य अपारो रे ॥ १० ॥ ए० ॥ पुत्र गयो थयो एकलो, ए ऋद्धि संपद पामी रे ॥ नव निधि जिहां जावे तिहां, शा पुरुषा अनुगामी रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ उत्तम चरित्र कुमारनें, शुन मूहूरत शुन दीसें रे ॥ मकरध्वज नृपस्वहथें, दीधुं राज्य जगीशें रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ राज्य करो सुत ए तुमें, अमें हवे संयम लीजें रे ॥ चोथो आश्रम आवियो, आतम साधन कीजें रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ लेई सहुनी आज्ञा, व्रत लीधुं नृपालो रे ॥ कहे जिनहर्ष उत्साहशुं, सत्तावीशमी ढालो रे ॥१४॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चारे राज्य स्वामी थयो, उत्तमचरित्र नरिंद ॥ पूरव पुण्य पसाउलें, दिन दिन अधिक आणंद ॥ १ ॥ चारे अपछर सारिखी, चारे चतुर सुजाण ॥ चारे नारी पतिव्रता, चारे माने आण ॥ २ ॥ चालीश लक्ष अश्व जेहनें, चालीश लक्ष गजहोड ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चालीश लक्ष रथ रूयडा, पायक चारें कोड ॥ ३ ॥ चालीश कोडि ग्रामाधिपति, ऋद्धितणो नहीं पार ॥ चार राज्य सुख नोगवे, दिन दिन अधिक विस्तार ॥ ४ ॥ जिन प्रासाद करावियां, कीधी तीरथ जात्र ॥ अकरा कर सहु मेलिया, पोष्या उत्तम पात्र ॥ ५ ॥ बिंब नराव्यां जिनतणां, पुस्तक नख्यां नंमार॥साहमी वह्लल पण कीयां,पर उपगार अपार ॥६॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ चूनडीनी ॥ अथवा ॥
प्राणी वाणी जिनतणी ॥ ए देशी ॥

॥ एम धर्म करतां अन्यदा, आव्या तिहां केवल धार रे ॥ वांदण काजें नृप चालियो, उलट धरि चित्त अपार रे ॥ १ ॥ ए० ॥ पांचे अनिगम नृप साचवी, वांदी बेगा मुनि पास रे ॥ मुनिवर दे मीठी देशना, सांनलतां अंग उल्लास रे ॥ २ ॥ ए० ॥ संसारी जीव सुणो तुमो,जिन धर्म करो तुमें नायो रे॥ संसार सायरमां बूडतां, तरवानो एह उपायो रे ॥ ३॥ ॥ ए० ॥ संसार अनंत नमंतडां, मानवनव लाधो एह रे ॥ दश दृष्टांतें करि दोहिलो, चिंतामणि सरिखो जेह रे ॥ ४ ॥ ए० ॥ वली श्रुत सांनलवुं दोहिलुं, सुणतां उतरे मनकाट रे ॥ सांनलतां श्रुत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हियडा तणां, उघडे अज्ञान कपाट रे ॥ ५ ॥ए० ॥ सद्दहणा पण दोहिली, जीवने आवतां जाण रे ॥ जेम जल न रहे काचे घडे, तेम श्री जिनवरनी वाण रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ वीर्य फोरववुं दोहिलुं, संजमने विषय सुजाण रे ॥ ए चार अंग छे दोहिलां, पामी नें करो प्रमाण रे ॥ ७ ॥ ए० ॥ एतो धर्मवेलाएं जीवने, आलस आवें बहु नांति रे ॥ आरंन वेलायें जागतो, निशदिन करवानी खांति रे ॥ ८ ॥ ए० ॥जे जीव हणे बोले मृषा,ले अदत्त अब्रह्मशुं चित्त रे ॥ प रिग्रह मेले बहु नांतिनो, डुर्गतिशुं तेहने प्रीत रे ॥ ॥ ए ॥ ए० ॥ दूर करी तेरे काठिया, क्रोधादिक चार कषाय रे ॥ जिपी पाचेंश्निा नोगने, जिनधर्म सोहेलो थाय रे ॥१०॥ ए० ॥ कोण मात पिता केहनी सुता, केहना सुत केहनी नार रे ॥ डुर्गति जातां इण जीवने, कोई नही राखणहार रे ॥११॥ए०॥ सहु कोइ स्वारथनुं सगुं, स्वारथ पाले सहु नेह रे ॥ जबही स्वारथ पहों चे नही, तो तुरत दिखावे छेह रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ मूरख कहे माहरो माहरो, ए धन ए घर परिवार रे ॥ प रनव जाये जीव एकलो, पण कोय न जाये लार रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ तो खोटी ममता मूकीने, करो धर्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थइ शजमाल रे ॥ जिनहर्ष दीधी मुनिदेशना, अठा वीशमी ए ढाल रे ॥ १४॥ए०॥ सर्वगाथा ॥ ५६३॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी एणि परें देशना,सांनली सहुको लोक ॥ परम प्रमोद थयो हवे, रवि दर्शन जेम कोक ॥ १ ॥ राजा पूछे मुनि प्रतें,विनय करी कर जोड ॥ नगवन् केणे कर्मे करी, पामी संपद कोड ॥ २ ॥ सायर मांहे केम पड्यो, मैनकघर रह्यो केम ॥ शुक थइ ग णिका घर रह्यो, कहो मुजने थयो जेम ॥ ३ ॥ केवल ज्ञानी मुनि कहे, सांनल राय सुजाण ॥ कीधां कर्म न टूटियें, नोगवियें निरवाण ॥ ४ ॥ जे जेहवां कीजें कर्म, तेथी फल प्रापत्त ॥ पूरवनव सुण्य ताहरो,ल हि संपत्त विपत्त ॥५ ॥

॥ ढाल उगणत्रीशमी ॥ पास जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजा केवली कहे, हिमवंत नूमि सुवि शालो रे ॥ सुदत्तग्रामा नामें नलो, धनधान्य समृद्धि रसालो रे ॥ १ ॥ सु० ॥ धनदत्त कौडुंबिक वसे, ते चार वधू नरतारो रे ॥ पहिलां द्रव्य हतुं घणुं, काले गयो धनविस्तारो रे ॥ २ ॥ सु० ॥ दारिद्रनो पासो थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यो तिहां आव्या चार मुनीशो रे ॥ चोरें लूटयां क
ुपडां, टाढें धूजे निशि दीसो रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ धनद
त्त नइक नावियो, अनुकंपा मनमां आणी रे ॥ वस्त्र
प्रावरण पोता तणां, वहोराव्यां उत्तम प्राणी रे ॥४॥
॥ सु० ॥ चारे स्त्री अनुमोदना, कीधी प्रिय धन अव
तारो रे ॥ धनदत्त तेणें पुण्यें करी, तुं राय थयो शिर
दारो रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ चार राज्य पाम्या इहां, ते
चारे वस्त्र प्रनावें रे ॥ पांच रत्न बहु धन लह्यां, व
लि नारी चार सुहावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तेणे कर्मे
तुं मीननें, पेटें वसियो कोइ काजो रे ॥ मैनिक घर प
ण तुं रह्यो, ए कर्म तणी सहु चालो रे ॥ ७॥ सु० ॥
कोइएक नव तें मुनि नणी, मेहेलो देखी सूगाणो
रे ॥ गंधाए मत्स्य सारिखो, ते कर्म तिहां बंधाणो रे ॥
॥८ ॥ सु०॥ सहस्रतमे पहिले नवें, तें पोपट पंजर
घाल्यो रे ॥ ते पापें पोपट थयो, तुज कर्मे ए फ
ल आव्यो रे ॥ ए ॥ सु० ॥ अनंगसेना पूरव नवें,
निज सहियर कृत शणगारो रे ॥ आवो वेश्या बहेन
डी, हांसी कीधी तेणिवारो रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तेणें
कर्मे वेश्या थइ, राजादिक सुणी वृत्तांतो रे ॥ ऐ ऐ
कर्मविटंबना, पाम्यो वैराग्य महंतो रे ॥ ११ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुण कारणकेवली कहे ॥ ए आंकणी ॥ राज्य दीयुं निज पुत्रनें, चारे नारि संघातें रे ॥ ऋद्धि राज्यादिक छोडिने, संयम लीधो मन खांतें रे ॥ १२ ॥सु० ॥ चारित्र पाली उजलुं, तप करि कर्म खपायो रे ॥ अंतकाल अणसण करी, सुरलोक तणां सुख पायो रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ महाविदेहें सीझशे, नृप उत्तमचरित्र कुमारो रे ॥ वस्त्रदानथी सुख लह्यां, यो दान सुणी अधिकारो रें ॥ १४ ॥ सु० ॥ नूत वेद सायर शशी १७४५, आशो शुदी पंचमी दिवसें रे ॥ उत्तमचरित्र कुमारनो, में रास रच्यो सुजगीशें रे ॥ १५॥सु०॥ श्री जिनवर सुप्रसादथी,श्रीपाटण नयर मझारो रे ॥ गाथा सत्याशी पांचशें, उगणत्रीशमी ढाल उदारो रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ श्री खरतर गच्छ गुण निलो, श्री जिनचंद सूरिंदो रे ॥ वाचक शांतिहर्ष गणि, जिन हर्ष सदा आणंदो रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ स० ॥ ५८५ ॥

इति वस्त्रदानोपरि श्री उत्तम चरित्रकुमाररास संपूर्णः ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ ८०१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org